नव किरण प्रकाशन समूह द्वारा प्रकाशित

नवंबर, 2021

बाल किरण

एक उम्मीद...

बाल मासिक पत्रिका

बाल दिवस

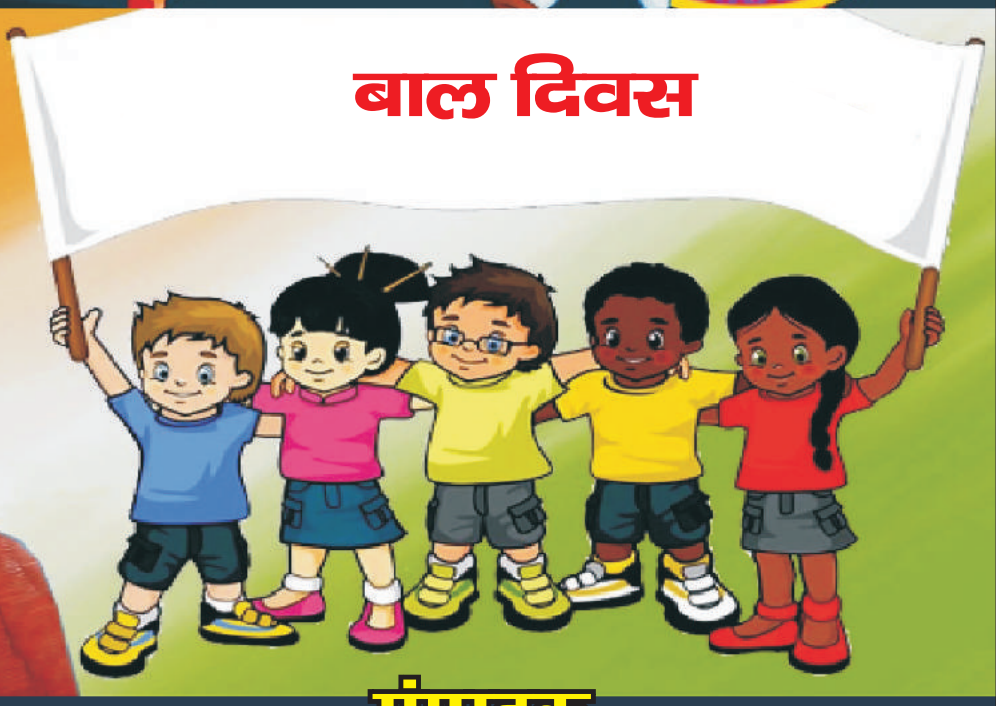

संपादक

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

'बाल किरण' मासिक ई-पत्रिका

('नव किरण' प्रकाशन समूह बस्ती, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित)

वर्ष-02 | अंक-07 | नवंबर, 2021

संरक्षक

डॉ. दिविक रमेश
वरिष्ठ बाल साहित्यकार
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

संजीव जायसवाल 'संजय'
वरिष्ठ बाल साहित्यकार
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

राजकुमार जैन 'राजन'
वरिष्ठ बाल साहित्यकार
आकोला, चित्तौड़गढ़
(राजस्थान)

सलाहकार

शिव मोहन यादव
बाल साहित्यकार
कानपुर देहात (उत्तर प्रदेश)

डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या
कटिहार (बिहार)

संध्या श्रीवास्तव
पटियाला (पंजाब)

ऋषभ श्रीवास्तव
बस्ती (उत्तर प्रदेश)

संपादक

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती (उत्तर प्रदेश)

सह संपादक

डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी
बाल साहित्यकार
चंदौसी, सम्भल (उत्तर प्रदेश)

उप संपादक

डॉ. अजय कुमार
अंग्रेजी विभाग
पटना कॉलेज, पटना (बिहार)

संपादकीय पता-

बाल किरण मासिक पत्रिका
कैतहा, भवानीपुर, बस्ती (उत्तर प्रदेश)
व्हाट्सएप-7355309428
ई-मेल- editor.balkiran@gmail.com
वेबसाइट-https://www.navkiranmaskikpatrika.in
(पत्रिका के वर्तमान व पूर्व अंकों को उक्त वेबसाइट पर पढ़ा जा सकता है)

प्रकाशक/स्वामित्व: नव किरण प्रकाशन, बस्ती (उ.प्र.)

पत्रिका में रचनाओं का प्रकाशन नि:शुल्क है।
कृपा सदस्यता लेकर और स्वेच्छा से आर्थिक योगदान
देकर पत्रिका के सतत प्रकाशन में सहयोग करें।

वार्षिक : 250/- पंचवर्षीय : 1000/-
द्विवार्षिक : 400/- आजीवन : 3000/-
त्रैवार्षिक : 700/- संरक्षक सदस्यता : 4100/-

खाते का विवरण :
A/c : 2787101004463
IFSC : CNRB0002787
Lal Devendra Kumar Srivastava
Canara Bank Basti (U.P.)

आवरण पृष्ठ व आंतरिक चित्रण गूगल से साभार

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है
विवाद होने पर या कॉपीराइट का उल्लंघन होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे।
पत्रिका पूर्णतया अव्यवसायिक व संपादकीय मंडल अवैतनिक

अनुक्रमणिका

बाल किरण की पाती/लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव-4
बाल किरण की पाती/डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी-6

दिसंबर, 2021 अंक के लिए रचना आमंत्रण-54

बाल आलेख/रोचक जानकारी/प्रेरक प्रसंग/शोध आलेख

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव-8/तरुण कुमार दधीच-10/शिखर चंद जैन-34/विनय मोहन खारवन-62/डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी-14

बाल नाटक

डॉ. सुधा गुप्ता ''अमृता''-19

बाल कहानी

डॉ. रंजना जायसवाल-29/लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव-36/डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी-42/डॉ. मंजरी शुक्ला-46/डॉ. अनीता पंडा-52/लाल बहादुर श्रीवास्तव-55/टीकेश्वर सिन्हा ''गब्दीवाला''-60

बाल कविता/बाल गीत

डॉ. कैलाश गुप्ता सुमन-12/अशोक श्रीवास्तव 'कुमुद'-13/धीरेन्द्र द्विवेदी-भूपसिंह भारती-24/गौरव बाजपेयी स्वप्निल-25/रामगोपाल राही लाखेरी-32/अरुण गिजरे-33/डॉ. राकेश चक्र-निशा कोठारी-40/बलदाऊ राम साहू-अहिबरन पटेल-41/सतीश उपाध्याय-श्रुति त्रिपाठी-50/डॉ. रमेश यादव-डॉ. प्रतिभा कुमारी पराशर-51/मीरा सिह 'मीरा'-रोचिका अरुण शर्मा-58/रेखा भारती मिश्रा-सुशीला शर्मा-59

बाल पुस्तक समीक्षा

मुकेश कुमार सिन्हा-63

बताओ तो जानें

गेंद किसको मिलेगी/बताओ तो जानें-चाँद मोहम्मद घोसी-67

बाल सृजन

अनुभव राज-66/गार्गी माहेश्वरी-67/हिमानी जोशी-67/दिव्याश्री सतेन्द्र शर्मा-67

बाल किरण की पाती...

दीपावली और बाल दिवस

प्यारे बच्चो!

आप सब कैसे हैं? आशा है, आप सब प्रसन्नतापूर्वक होंगे। इस माह नवंबर में 'दीपावली' और 'बाल दिवस' है। बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को दीपावली का त्योहार बहुत अच्छा लगता है। बच्चो, आप लोग दीपावली का साल भर इंतजार करते हैं। क्योंकि इस त्योहार में आपको पटाखे फोड़ने और फुलझड़ियां जलाने का अवसर मिलता है, जिसमें आप लोगों को खूब आनंद आता है।

सच में दीपावली प्रकाश का पर्व है। इस त्योहार से अतिथि देवो भवः की आशा मन में बलवती होती है। दीप पर्व 'प्रेम का पर्व' भी माना जाता है। बच्चों को दीपावली की बेसब्री से प्रतीक्षा रहती है। पटाखे और फुलझड़ियों के साथ ही साथ अच्छे-अच्छे पकवान और मनपसंद मिठाइयाँ खाने को मिलती हैं। कई दिनों की छुट्टियाँ भी स्कूलों में होती हैं। खूब मस्ती करने को मिलती है।

आपके मम्मी-पापा पसंद के कपड़े भी खरीदते हैं। हफ्तों पहले से साफ-सफाई और घर को रंग-रोगन किया जाता है। घर साफ-सुथरा और सुंदर लगने लगता है। चारों ओर उल्लास और खुशियाँ नजर आती हैं।

इसी माह में 14 नवंबर को 'बाल दिवस' आता है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु के जन्मदिन को 'बाल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। नेहरु जी बच्चों को बहुत मानते थे। वे प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए भी बच्चों से बातचीत करते रहते थे और समय निकालकर बच्चों के बीच पहुँच जाते

थे। नेहरुजी को गुलाब बहुत पसंद थे। वे अपनी जैकेट में गुलाब लगाना बहुत पसंद करते थे।

नेहरुजी का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (प्रयागराज) में 14 नवंबर, 1889 ई. को हुआ था। देश को स्वतंत्रत कराने में जवाहर लाल नेहरु की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महात्मा गांधी के आह्वान पर वे वकालत छोड़कर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े थे। नौ बार जेल भी गए। देश जब आजाद हुआ, तब उन्हें प्रधानमंत्री बनाया गया। वे देश के सर्वोच्च पुरस्कार 'भारतरत्न' से भी सम्मानित किए गए। साथ ही वे कई बार नोबेल पुरस्कारों के लिए नामित भी हुए।

'बाल किरण' के इस नवंबर, 2021 अंक में 'दीपावली पर्व' और 'बाल दिवस' पर सुंदर कविताएँ और कहानियाँ प्रकाशित की गई हैं। कुछ अन्य रचनाएँ भी बेहद रोचक हैं, जिसे पढ़कर आपको अच्छा लगेगा। इस अंक में शामिल सभी बाल साहित्यकारों एवं बाल सृजनकर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। बच्चों से आग्रह है कि वे अपनी कविता, कहानियाँ, पेंटिंग्स आदि पत्रिका को भेजते रहें।

किसी भी पत्रिका को सफल बनाने में रचनाकारों का जितना योगदान होता है, उतना ही पत्रिका की सदस्यता लेकर और उसे आर्थिक सहयोग करने से प्रकाशन में निरंतरता बनी रहती है। 'बाल किरण' को रचनाकारों का नियमित रचनात्मक और आर्थिक सहयोग प्राप्त हो रहा है। जिसके लिए आप सभी का आभार प्रकट करता हूँ। आशा ही नहीं वरन विश्वास है कि आगे भी पत्रिका के लिए आपका सहयोग, समर्थन और संबल प्राप्त होता रहेगा। पत्रिका के इस अंक पर आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। आपके सुझावों का सदैव की भाँति स्वागत है।

आप सभी को रोशनी के पर्व 'दीपावली' और 'बाल दिवस' की आत्मिक शुभकामनाएँ !!

आपका भैया

(लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव)
संपादक
बस्ती (उ. प्र.)

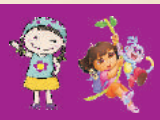

बाल किरण की पाती...

बच्चे और समाज

प्यारे बच्चो,

यह 21वीं सदी का समय है। जहाँ हमने कई क्षेत्रों में बुलंदियों को छुआ है, वहीं हमारी भावी पीढ़ी दूसरी दिशा में जा रही है, यह चिंता का विषय तो है ही, लेकिन बच्चों के प्रति होने वाली हिंसा में भारी बढ़ोत्तरी हुई है, तो वहीं मोबाइल, गेम बच्चों में चिड़चिढ़ापन बढ़ा रहे हैं। पाश्चात्य व्यंजनों के स्वाद में घर के दूध-घी और मट्ठे के स्वाद को वे भूल गए हैं। माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को दूसरे बच्चों से आगे निकलने की होड़, कैरियर बनाने, सबसे आगे निकलने का भारी-भरकम ज्ञान परोस रहे हैं, जिससे बच्चों में ज्ञान की वृद्धि कम और चिड़चिढ़े अधिक हो रहे हैं।

साथ ही हमारे आसपास बच्चों को हिंसा की ओर उन्मुख करती घटनाएं भी चिंताजनक हैं। हमें इनके प्रति सचेत रहकर कार्य करना होगा। आज बचपन ही असुरक्षित होता जा रहा है, तो ऐसे में हम उनके उज्ज्वल भविष्य की कल्पना कैसे कर सकते हैं। हमारी क्या जिम्मेदारी बनती है? इस पर गौर करना बेहद जरूरी है।

बच्चों के खिलाफ हिंसा पर रोक लगनी चाहिए। सभी बच्चों को हिंसामुक्त, सुरक्षित वातावरण में विकसित होने का अधिकार है। बच्चों के खिलाफ हिंसा न केवल उनके जीवन और स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि उनके भावात्मक कल्याण और भविष्य को भी खतरे में डालती है। भारत में बच्चों के खिलाफ हिंसा के मामले अत्यधिक हैं और लाखों बच्चों के लिए यह कठोर

वास्तविकता है।

सभी बच्चों को हिंसा, शोषण और दुर्व्यवहार से सुरक्षित रहने का अधिकार है। फिर भी दुनिया भर में सभी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के सभी धर्मों और संस्कृतियों के लाखों बच्चे हर दिन हिंसा, शोषण और दुर्व्यवहार का शिकार होते हैं। यह हिंसा शारीरिक, यौन और भावनात्मक हो सकती है और उपेक्षा का रूप भी ले सकती है। यह हिंसा अंतर्वैयक्तिक हो सकती है और उन संरचनाओं का परिणाम है जो हिंसक व्यवहार को अनुमति और बढ़ावा देते हैं।

घर, परिवार, स्कूल, देखभाल और न्याय प्रणाली, संबद्ध स्थान, कार्यस्थल और समुदाय में सभी संदर्भों में, जिसमें संघर्ष और प्राकृतिक आपदाएं भी शामिल हैं- हिंसा, शोषण और दुर्व्यवहार होता है। कई बच्चों को कई प्रकार की हिंसा, शोषण और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है, जिसमें यौन दुर्व्यवहार व शोषण, सशस्त्र हिंसा, तस्करी, बालश्रम, लिंग आधारित हिंसा, बाल विवाह, शारीरिक और भावनात्मक रूप से हिंसक बाल अनुशासन और अन्य हानिकारक प्रथाएं शामिल हैं।

इंटरनेट के बढ़ते उपयोग से भी बच्चों के साथ हिंसा के नए आयाम, जैसे साइबर-उत्पीड़न और ऑनलाइन यौन शोषण के रूप में हो रहा है। इस तरह की हिंसा के नतीजे हानिकारक और दीर्घकालिक हैं।

'बाल किरण' का नवंबर, 2021 का अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक में 'दीपावली' पर्व और 'बाल दिवस' पर केंद्रित सामग्री तैयार की गई है। पत्रिका को डिजाइन और कंपोज करने में काफी श्रम किया गया। कंप्यूटर कार्य करने वाले भैया को विशेष बधाई और आभार।

बच्चों से अनुरोध है कि अपनी लिखी रचनाएं और पेंटिंग बनाकर पत्रिका को भेजते रहें। यह आपकी अपनी पत्रिका है। पत्र लिखें, सुझाव भी दे सकते हैं। सदैव की भांति आपके सुझावों का स्वागत है।

आपका भैया

उमेश-चन्द्र सिरसवारी

(डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी)
सह संपादक
चंदौसी (उ.प्र.)

('बाल दिवस' पर विशेष)

बच्चों के प्रिय 'पं. जवाहरलाल नेहरु'

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती (उत्तर प्रदेश)

आजकल लोग किसी उच्च पद या महत्वपूर्ण पद पर आसीन होने पर अपने बच्चों को बमुश्किल समय दे पाते हैं। भौतिकवादी वर्तमान युग में माता-पिता का अपने बच्चों के साथ खेलना, उनसे बातें करना, उनकी इच्छा को जानना, उनके साथ समय बिताना शायद कम ही हो पाता है।

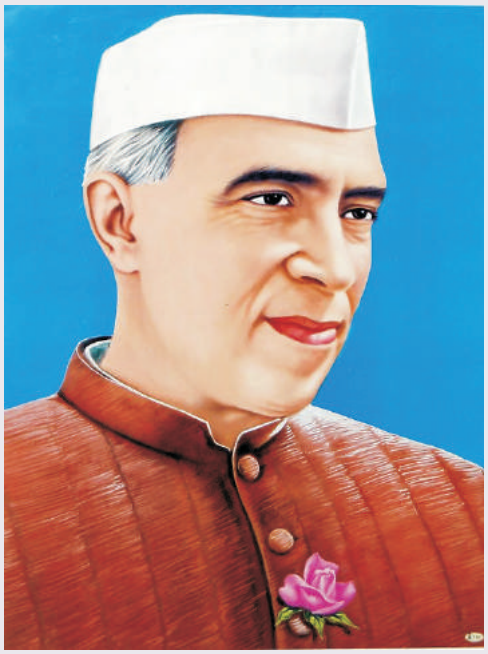

भारत जैसे विशाल देश के प्रधानमंत्री पद पर होते हुए भी पण्डित जवाहरलाल नेहरु बच्चों के लिए समय निकाल लेते थे। बच्चों को तो वे अति प्रिय थे। देश-विदेश में वे लोकप्रिय थे। इसीलिए बच्चों के बीच वह 'चाचा नेहरू' के नाम से प्रसिद्ध हुए। बच्चों से लगाव के कारण उनके जन्मदिन को 'बाल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। राजनीति और प्रशासन की समस्याओं से घिरे रहने के बावजूद नेहरु जी बच्चों के बीच पहुँच जाते थे, उनसे बातें करते थे और उनके साथ खेलते भी थे।

देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु जी को उनके जन्मदिन पर हम उन्हें शत शत नमन और अभिनंदन करते हैं। वास्तव में देश के विकास और प्रगति के लिए उनका अप्रतिम योगदान है।

पं. जवाहरलाल नेहरु का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (प्रयागराज) में पं.मोतीलाल नेहरु एवं श्रीमती स्वरुप रानी के घर आनन्द भवन में 14 नवंबर, 1889 को हुआ था। इनके पिता मोतीलाल नेहरु प्रसिद्ध वकील थे। नेहरु जी की आरंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। इनके पूर्वज राजकौल जी की विद्वता से प्रभावित होकर दिल्ली के बादशाह ने उन्हें दिल्ली के चाँदनी चौक में नहर के किनारे रहने के लिए घर दिया था। नहर के किनारे रहने के कारण तभी से इनका परिवार 'नेहरु परिवार' के नाम से जाना जाने लगा।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए नेहरु जी को इंग्लैंड भेज दिया गया। जहाँ 1905 में लंदन के प्रसिद्ध हैरो स्कूल में उनका दाखिला हुआ। दो साल पढ़ाई के बाद उन्हें कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज में प्रवेश लिया जहाँ से

1910 में उन्होंने स्नातक की उपाधि ली। इसके बाद वे लंदन के इनर टेंपल से वकालत की पढ़ाई पूरी कर भारत लौट आए और इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे। वकालत में उनका मन नहीं लगा। देश की दुर्दशा देखकर उनके मन में देश को स्वतंत्र कराने की इच्छा बलवती हो रही थी। उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था। देश की प्रजा का अंग्रेजों द्वारा शोषण और जनता पर अत्याचार किया जा रहा था। भारत के जन मानस को अपनी बात कहने का अधिकार नहीं था। ऐसे में 1916 में कांग्रेस के लखनऊ वार्षिक बैठक में नेहरु जी की पहली मुलाकात गांधी जी हुई। इस मुलाकात ने नेहरु जी की जीवनधारा ही बदल दी। यद्यपि आगे चलकर कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर नेहरु जी और गांधी जी के विचार अलग-अलग होते थे। फिर भी नेहरु जी ने प्रत्येक आंदोलन में गांधी जी का भरपूर सहयोग और समर्थन किया।

1919 में जलियांवाला बाग नृशंस हत्याकांड ने नेहरु जी के दिल को झकझोर दिया और वे सक्रिय से स्वतंत्रता आंदोलन में जुड़ गए। विदेशी सामानों की होली, सविनय अवज्ञा आंदोलन, अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन आदि अनेक आंदोलनों में सक्रियता से भाग लिया और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देश को आजाद कराने के लिए 1928 में नेहरु जी ने भारतीय स्वतंत्रता लीग की स्थापना की। देश की आजादी के लिए नेहरु जी 9 बार जेल गए, किंतु वे विचलित नहीं हुए। सबसे ज्यादा उनका अंतिम बंदीकाल तीन वर्ष का कारावास जून, 1945 में खत्म हुआ। लंबे संघर्ष के बाद 15 अगस्त, 1947 को हमारे देश को स्वतंत्रता हासिल हुई। जवाहरलाल नेहरु जी स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बनाए गए। अपनी दूरदर्शिता और कर्मठता से नेहरु जी ने कृषि और उद्योगों के विकास हेतु पंचवर्षीय योजनाओं की आधारशिला रखी। नेहरु जी ने देश के चहुँमुखी विकास हेतु अनेक कार्य किए। वे बिना थके प्रतिदिन 18 से 20 घंटे कार्य करते थे। 75 वर्ष की आयु में 27 मई 1964 को अस्वस्थ होने के कारण उनका निधन हो गया।

नेहरु जी एक प्रखर राजनेता के साथ ही विद्वान लेखक भी थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखी। 'माई ऑटोग्राफी', 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया', 'गिलिम्सेस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' प्रमुख है। विश्व के शांतिदूत, आधुनिक भारत के शिल्पी कहे जाने वाले नेहरु जी को वर्ष 1955 में देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया गया।

बच्चों से नेहरु जी को बहुत ज्यादा लगाव था। इसीलिए प्रत्येक वर्ष उनके जन्मदिन 'बाल दिवस' को बच्चों द्वारा बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। स्कूलों और विद्यालयों को इस दिन गुब्बारों से सजाया जाता है। कहीं-कहीं पर केक भी काटते हैं। भाषण प्रतियोगिता और कई कार्यक्रम भी होते हैं। बच्चे इस दिन बहुत ही खुश होकर झूमते-गाते हैं और चाचा नेहरु को याद करते हैं।

बच्चों में सृजन प्रवृत्ति का विकास करें

तरूण कुमार दाधीच
उदयपुर (राज.)

लेखन के प्रति अभिरुचि होना बालकों की मूल प्रवृत्ति मानी जाती है, जिसकी सृजनात्मक परिधि में वे अपनी तृप्त-अतृप्त आकांक्षाओं की पूर्ति के साथ ही अपने भावों को विविध रूप दे कर मनचाहा सृजन करते हैं। गद्य की विविध विधाओं के माध्यम से बालक अपने व्यक्तित्व के बहुआयामी रूपों को अभिव्यक्त कर जीवन का सर्वांगीण विकास करता है। बाल अभिरुचि को परख कर यदि सही दिशा निर्देश प्रदान किये जायें तो बालकों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शत करने का अवसर मिल सकता है।

कई बच्चों में लेखन प्रवृत्ति होती है लेकिन वे यह नहीं जानते हैं कि इस क्षेत्र में प्रवेश कैसे किया जाए? उन्हें यह भी ज्ञात नहीं होता है कि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी लिखी रचनाएं कैसे भेजी जाए और इसके लिए किस प्रकार की सामान्य जानकारी की आवश्यकता है? यदि इन बाल प्रतिभाओं को सही मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन मिले तो उनमें छिपी प्रतिभा उभर कर सामने आ सकती है और वे इस क्षेत्र में अपने भावों और विचारों को व्यक्त कर सकते हैं।

वैसे विभिन्न प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं भेजने के लिए नियम और दिशा निर्देश प्रकाशित होते रहते हैं। चाहे कविता हो या कहानी, लेख हो या महापुरुष की जीवनी। लेखन के लिए बच्चों को मानसिक रूप से स्वस्थ रहना परम आवश्यक है। मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हुए ही रचनात्मक विकास संभव हो पाता है। कुछ परिवारों में माता-पिता, बच्चों का लेखन के प्रति रूझान देखकर उन्हें प्रोत्साहित करते रहते हैं लेकिन कुछ परिवारों में बच्चों के माता-पिता उन्हें यह कह कर हतोत्साहित कर देते हैं कि "बड़ा आया है लेखक बनने वाला!" दरअसल ऐसा करना बच्चों की मानसिकता पर आघात करना है। जिन बच्चों को प्रोत्साहन मिलता है, वे तो इस क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हैं और इनमें से कई बच्चे स्वतः ही अपनी प्रतिभा के बल पर लेखन क्षेत्र में सफल होने लगते हैं। ऐसी उदीयमान प्रतिभाओं को यह मालूम नहीं होता कि पत्र-पत्रिकाओं में संपादक जी के नाम रचनाएं कैसे भेजी जाये।

सामान्यतः रचनाएं फुलस्केप कागज पर लिखी जाती हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि रचनाएं पर्याप्त हाशिया छोड़कर कागज के एक तरफ ही लिखी जाती हैं। रचनाएं सुपाठ्य हो अर्थात् उन्हें आसानी से पढ़ा जा सके। रचनाएं टंकित करवा कर भेजी जाती है लेकिन सभी ऐसा करने में समर्थ नहीं होते। साथ ही जिन बच्चों की हैंडराइटिंग अच्छी है, उन्हें रचनाएं टंकित कराने की आवश्यकता नहीं है। रचनाएं प्रेषित करने के लिए सभी पत्र-पत्रिकाओं में संपादकीय कार्यालय का पता छपा रहता है।

रचना लिखने के बाद एक कागज पर संपादक जी के नाम प्रार्थना पत्र संलग्न करना होता है कि मैं अमुक शीर्षक से रचना या रचनाएं प्रकाशनार्थ प्रेषित कर रहा हूं। रचना के साथ भेजने वाले का पता लिखा एवं पर्याप्त डाक टिकट लगा लिफाफा संलग्न किया जाता है ताकि अस्वीकृत रचनाएं वापस लौट आए। संपादकीय कार्यालय से रचना की स्वीकृति के बारे में सूचना प्राप्त होती है। कभी-कभी रचनाएं विलंब से पहुंचती है या लौटते समय कट-फट जाती है। ऐसी स्थिति में रचना की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लेनी चाहिए।

आजकल ईमेल और व्हाट्सएप द्वारा भी रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजी जाती हैं। जिनके पास स्मार्टफोन की सुविधा है, वे ईमेल या व्हाट्सएप से रचनाएं भेज सकते हैं। इसके लिए बच्चे शुरूआत में अपने माता-पिता, अभिभावकों एवं मित्रों से मदद ले सकते हैं। नवोदित प्रतिभाओं को लेखन के क्षेत्र में सफल होने के लिए मौलिक, अप्रकाशित रचनाओं को ही प्रकाशन के लिए भेजना चाहिए। दूसरे की रचनाओं को अपने नाम से कभी नहीं भेजनी चाहिए। ऐसा करना अपने ही पांव पर कुल्हाड़ी मारने जैसा होता है। इसके अलावा रंग भरो प्रतियोगिता, शीर्षक प्रतियोगिता, कविता या कहानी लिखो प्रतियोगिताओं में भाग लेने से लेखन प्रतिभा का विकास होता है।

कुछ बालक रचनाएं भेजते रहते हैं लेकिन उनकी रचनाएं प्रकाशित नहीं होती। ऐसी स्थिति में बालकों को निराश नहीं होना चाहिए अर्थात् हीन भावना को मन में पनपने नहीं देना चाहिए। लौटी हुई रचना के विषय में उन बातों को खोजना चाहिए जिसके कारण रचना अस्वीकृत हुई है। इसके कई कारण हो सकते हैं। जैसे भाषागत त्रुटियां हों या लिखते समय हम अपने मूल उद्देश्य से भटक गए हों। कभी-कभी हम चाहते क्या है और क्या लिख जाते हैं। अतः अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करने के लिए अन्य प्रकाशित रचनाओं को पढ़कर तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। इस तरह बच्चों में सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास हो सकता है।

जंगल की दीवाली

डॉ. कैलाश गुप्ता सुमन
मुरैना (मध्य प्रदेश)

जंगल के कोने-कोने की,
सबने करी सफाई।
सभी जानवर खुश थे सुनकर,
दीप मालिका आई।।

लीप रही बिल्ली जंगल को,
चिड़िया चौक पुराये।
सरपट भाग भागकर हिरनी,
वंदनवार सजाये।।

लाया शहद बहुत सा भालू,
हाथी गन्ने लाया।
लाकर केक शहर से बंदर,
सबको खूब खिलाया।।

लक्ष्मी माँ की करी आरती,
मोदक भोग लगाये।
दे मैया आशीष वनों में,
सुख समृद्धि आये।।

खूब चलाई आतिशबाजी,
होता धूम धड़ाका।
तभी कहीं से सिंह शिशु पर,
आकर गिरा पटाखा।।

पड़ा रंग में भंग जल गया,
शेर शिशु बेचारा।
नहीं समय पर मिली चिकित्सा,
असमय स्वर्ग सिधारा।।

दूर रहो आतिशबाजी से,
नहीं पास में आओ ।
सिर्फ फुलझड़ी और चिटपिटी,
जी भर आप चलाओ।।

कुंभकार की व्यथा कथा

दिनभर माटी में रहता है,
माटी से बतियाता।
कुंदन जैसा तपा तपा कर,
सुंदर कुंभ बनाता।।

कभी बनाता टेसू झेंझी
डबुआ दीप सरैया।
कभी भव्य प्रतिमा देवी की,
राधा संग कन्हैया।।

भिन्न भिन्न आकृतियाँ देता,
सुंदर उन्हें सजाता।
गोल गोल धरती के जैसी,
गुल्लक सुघड़ बनाता।।

भोर भये से सांझ ढले तक,
दिन भर चाक चलाता।
इतनी मेहनत करने पर भी,
पेट नहीं भर पाता।।

विद्युत और मोम के दीपक,
छीन रहे हैं रोटी।
थरमाकौल छीनता उसके,
तन पर बची लंगोटी।।

बिके खेत खलिहान बिक गये,
गदहा और मढ़ैया।
कुंभकार का चैन छिन गया,
दिन में दिखीं तरैया।।

मत भूलो मिट्टी को बच्चों,
इसका त्याग न करना।
मिट्टी से ही जन्म मिला है,
मिट्टी में ही मरना।।

दद्दा

डाक्टर मना किया था मीठा,
दद्दा को था रोग अनूठा,
देख मिठाई लार चुआते,
बिन मीठा सब लगता झूठा।

खीर मुरब्बा घर में बनता,
दद्दा को मीठा ना मिलता,
माँग माँग कर दद्दा हारे,
बिन मीठा घर बैरी लगता।

रात अँधेरी मोटा गद्दा,
नींद न आती जगते दद्दा,
इस कोने से उस कोने तक,
करवट बदल रहे थे दद्दा।

मीठा खाऊँ यह मन करता,
पकड़ न जाऊँ डर भी लगता,
सब सोए थे नींद में गहरी,
बेकाबू मन खूब तड़पता।

महक लगी दद्दा ललचाया,
उठकर अलमारी तक आया,
लगा खोलने हर डिब्बे को,
दद्दा का मनवा भरमाया।

चुपके चुपके खोला डिब्बा,
डिब्बे में था गरम मुरब्बा,
जीभ जल गई जैसे खाया,
गिरा हाथ से उनके डिब्बा।

घर के लोग सभी उठ जागे,
दद्दा जी कमरे मे भागे,
कसम खा रहे कान पकड़ कर,
करेंगें गलती अब न आगे।

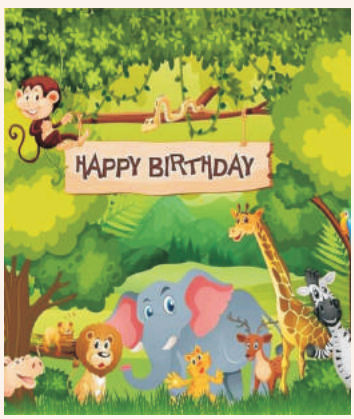

अशोक श्रीवास्तव 'कुमुद'
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

चीकू का जन्मदिन

जन्म दिवस चीकू का आया,
लगा कैप घूमा इतराया,
दिया निमंत्रण मन हरषाया,
नंदन वन में रौनक छाया।

चुनमुन चिड़िया सजधज आयी,
फूलों की माला बुन लायी,
सुन्दर माला सब मन भायी,
चीकू को माला पहनायी।

केक कैंडिलें भालू लाया,
काट केक चीकू मुस्काया,
ताली बजी बहुत इठलाया,
केक सभी ने मिलकर खाया।

सूट बूट में बंदर आया,
ठुमक ठुमक कर नाच दिखाया,
गीत जन्मदिन लोमड़ गाया,
बजा बांसुरी धाक जमाया।

बिस्कुट टाफी कोका कोला,
इंडली सांभर पूड़ी छोला,
ढक्कन डोंगे का ज्यों खोला,
लगी महक सबका मन डोला।

गिफ्ट खोलकर देखे छौना,
सब लाए थे बहुत खिलौना,
गुड्डा गुड़िया और झुनझुना,
झूला गाड़ी मोटा बौना।

बालमन के कुशल कवि : डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी

डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी
बलिया (उ.प्र.)

'स्मार्ट जंगल' बाल काव्यकृति अक्षर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 64 पृष्ठ का सुंदर जिल्द में लिपटा साहित्यकार डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी द्वारा रचित नूतन काव्य संग्रह है। डॉ. सिरसवारी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। वे बालसाहित्य से पिछले 15 वर्षों से जुड़े हैं और तन-मन-धन से उसके प्रति समर्पित हैं। बालसाहित्य की कई पत्रिकाओं में वे अपना यथासंभव योगदान देते रहते हैं, चाहे वह बालसाहित्य के प्रकाशन का हो या संपादन का, लेखन का हो या फिर बालसाहित्य के प्रति जनमानस में प्रेरणा देने और रुचि जगाने का हो। वर्तमान में बालकवि डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ सुंदर-सुंदर बाल कविताओं का सृजन कर रहे हैं। उनके बालकाव्य संग्रह 'स्मार्ट जंगल' में सत्ताइस चुनिंदा कविताओं को शामिल किया गया है, जिनमें चिड़िया रानी आ जाओ, चलो कहीं घूमकर आएँ, अब तो छुट्टी शुरू हमारी, देखो फिर से होली आई, बिजली रानी बिजली रानी, वृक्ष हमारे सच्चे-साथी, जाम बना है बड़ी समस्या, हर आजादी जाड़े में, मंजिल पाकर ही दम लेंगे, आया पर्व दीवाली का, प्यारी चिड़िया, चूहेराम की सुनो कहानी, रबड़ी, छुट्टी व्यर्थ चली न जाए, गरमी की चल पड़ी हवाएँ, सिंहराज की शादी है, जल्दी नहीं उठाना माँ, दोस्ती करो किताबों से, बच्चों की दुनिया है न्यारी, लो अब सर्दी की ऋतु आयी, देखो वसंत ऋतु है आई, अब क्यों न आती गौरैया, मोबाइल की महिमा, चूहेराम ने खेत खरीदा, घूम रहे थे बंदर चार, स्वयं अपनी करो सुरक्षा और स्मार्ट जंगल शामिल हैं।

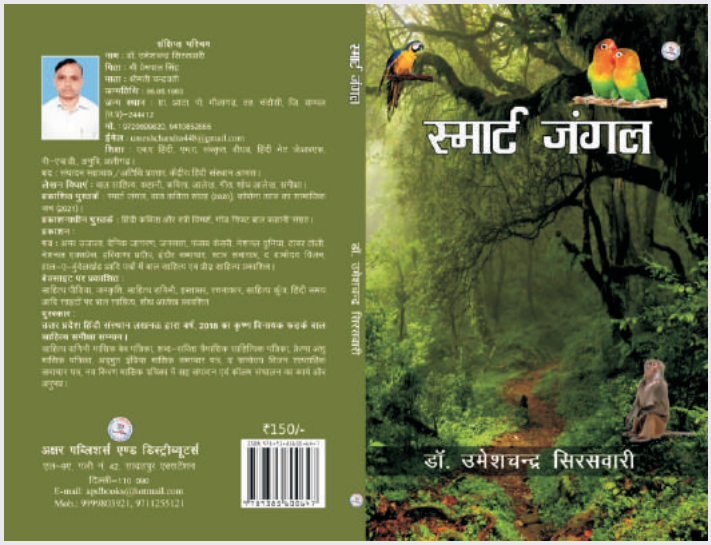

इस काव्य संग्रह की लगभग सभी कविताएँ नाना प्रकार के अर्थात विभिन्न भावों से गढ़ी

गई और बच्चों में अच्छे संस्कारों को जगाती कविताओं का ऐसा गुलदस्ता है जो कि गेय, तुकांत और सुरीली तथा ग्रामीण संस्कृति को अधुनातन संस्कृति से जोड़ने वाली कविताएँ हैं। हिंदी बाल कविता आधुनिक युग की देन है और वह आधुनिक सर्जक के चिंतन की उपज है।

डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास के जितने बड़े भक्त हैं, उससे कहीं गहरे और तुलसी साहित्य के अध्येता हैं। मन में बसने वाले तुलसीदास की 'रामचरितमानस' और कवितावली से प्रभावित हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी ने बालमन की झाँकी को बड़ी ही सहजता से प्रस्तुत किया है।

बाल कविता यानी बच्चों के लिए लिखी गयी कविता, जिसमें बच्चों की शिक्षा, जिज्ञासा, संस्कार एवं मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर रचना की गयी हो। वह चाहे माँ की लोरियों के रूप में हो या पिता की नसीहतों के रूप में या बच्चों के आपस के खेल-खेल में हों। डॉ. सिरसवारी के लिए बच्चा जीवन की अनमोल निधि है। बच्चे स्वभाव से सहज, सरल, सरस, जिज्ञासु, उत्साह से भरा, कल्पना के पंख लगाकर पूरी दुनिया की सैर करने वाला तथा मौलिक रचनात्मकता से भरा होता है। बालकवि डॉ. सिरसवारी का कहना है कि, "बच्चों का मन हमेशा एक खोजी अन्वेषक की तरह है, जो हर समय क्रियाशील एवं सचेत रहता है।" उनकी कविताएँ बचपन की याद दिलाती हैं, जिसका अत्यंत मर्मस्पर्शी एवं भावप्रवणता से भरा चित्र उमेशचन्द्र सिरसवारी की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है-

"मथुरा दिल्ली और आगरा,
तुमको ताजमहल दिखलाएँ।
चलो कहीं घूमकर आएँ।
अगर चलो तुम हरिद्वार तो,
तुमको गंगा जी नहलाएँ।
सब धामों की सैर कराएँ,
लक्ष्मण झूला तुम्हें झुलाएँ।
चलो कहीं घूमकर आएँ।।"

डॉ. सिरसवारी की इन पंक्तियों से संस्कृत, संस्कृति और संस्कार का उद्घाटन प्रभावी रूप से बालकों के बीच हुआ है। कविता किसी भी बालसाहित्य का महत्वपूर्ण भाग होती है। बालसाहित्य में कहानियाँ तथा लेख भी होते हैं, पर जो चीज बच्चों की जुबान पर याद रह जाती है, वह कविता है।

आज विश्व में प्रदूषण सुरसा के मुँह की तरह बढ़ता जा रहा है और जिसके लिए हम पृथ्वीवासी ही जिम्मेदार हैं। हम अपनी चेतना द्वारा इस समस्या से निजात पा सकते हैं और इस कार्य को आने वाली पीढ़ियाँ बेहतरीन तरीके से कर सकती हैं। 'स्मार्ट जंगल' संग्रह की कविताएँ बालमन को पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति जागृत कर इस धरती को हरा-भरा बनाए रखने की सीख देती हैं और बच्चों को पर्यावरण को बचाने का संदेश देती हैं। बालकवि डॉ. सिरसवारी की कविता 'अब तो छुट्टी शुरू हमारी' धरती को हरा-भरा करने की मुहिम है-

''अब तो छुट्टी शुरू हमारी,
करतब नए दिखाएँगे।
सबको अपने साथ में लेकर,
नया कुछ कर दिखलाएँगे।
पेड़ लगाकर सब लोगों को,
इनके लाभ गिनाएँगे।
इनसे हमें लकड़ियाँ मिलतीं,
फल और फूल दिलाते हैं।
यह बादल को रोक धरा पर,
पानी भी बरसाते हैं।
तेज धूप में छाया देकर,
राहत भी पहुँचाते हैं।''

बाल साहित्य की रचना बच्चों की मानसिक एवं बौद्धिक क्षमताओं के अनुसार लिखी जानी चाहिए, जिससे बच्चों की मानसिक प्रशिक्षण के साथ उनके ज्ञान में भी निखार आए। बच्चों की दुनिया हमारी दुनिया से सर्वथा भिन्न होती है। उनके देखने, समझने तथा परखने का नजरिया हमारे नजरिए से भिन्न होता है। इसलिए बच्चों का साहित्य लिखने के लिए बच्चा बनना पड़ता है। ध्यातव्य है कि डॉ. सिरसवारी को जब भी मौका मिलता है वो बच्चों के बीच जा पहुँचते हैं। बच्चों के मनोविज्ञान को, उनके मानसिक भूगोल को, बदमाशी के गणित को, उनके खेलने के इतिहास को और दिमाग के विज्ञान को भली-भाँति चिंतन-मनन कर कविताओं का सृजन करते हैं।

बालमन के युवा कवि डॉ. सिरसवारी राह चलते-फिरते बच्चों की दुनिया में जा पहुँचते हैं। टहलते-टहलते तमाम प्रकार की कल्पनाओं में ऊँची उड़ान भरने लगते हैं। एक कवि को कविताई करने के लिए इन सभी भावों से गुजरना पड़ता है तब जाकर कविताओं का सृजन होता है। 'जाम बना है बड़ी समस्या' ऐसी ही एक कविता है-

''जाम बना है बड़ी समस्या,
कोई इसको सुलझाओ।
डीएम अंकल आप जरा सा,
गौर यहाँ पर फरमाओ।
जाता हूँ स्कूल अगर तो,
जगह जगह फँस जाता हूँ।
देरी से पहुँचता मैं स्कूल,
टीचर से डाँटा जाता हूँ।''

बच्चों में बाल्यावस्था में उत्सुकता, तार्किकता तथा कल्पना शक्ति का विकास तीव्रतम होता है। इस वर्ग के बच्चों में अधिगम तथा समझने का कौशल और बड़ों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति पल्लवित तथा प्रस्फुटित होती है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि इनमें सकारात्मक सोच वाला, संस्कार प्रधान और उद्देश्यपरक कविता की रचना की जाए। साथ ही साहित्य के प्रति जिज्ञासा, आकर्षित करने वाला होना चाहिए। मानव-मूल्यों तथा राष्ट्र गौरव के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने वाली कविताओं का भी समावेश होना चाहिए। उपर्युक्त भावों को डॉ. सिरसवारी की बाल कविताओं में बखूबी देखा जा सकता है। साहित्य के प्रति अनुराग, पुस्तकों में दिलचस्पी दिखाती कविता 'दोस्ती करो किताबों से' क्या ग़ज़ब का प्रयोग है। इस

कविता से बालमन में जो सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, वह दूरगामी होगा। बाल्यावस्था में किताबों से दोस्ती निश्चित ही आने वाले समय में बालकों के लिए लाभकारी होगा। नवाजिए इस बालमन की झाँकी को-

''दोस्ती करो किताबों से,
हर पल साथ निभाती हैं।
बात बताती आदर्शों की,
किस्सा नया सुनाती हैं।
कविता-कथा ज्ञान देते हैं,
रास्ता सही सुझाती हैं।
दुनिया भर की सैर करातीं,
उत्तम पाठ पढ़ाती हैं।
इनको पढ़कर बढ़ती बुद्धि,
आगे बढ़ना सिखलाती हैं।
पुस्तक हैं अनमोल दोस्तो,
यह दादी बतलाती हैं।''

वैश्विक परिदृश्य को ध्यान में रखकर लिखी गयी कविता 'स्मार्ट जंगल' है। कवि इस कविता के माध्यम से जन-जन को, कण-कण को स्मार्ट बनाने की वकालत करता है। बच्चों के माध्यम से कवि सबका मंगल चाहता है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी से प्रभावित डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी पूरे विश्व को अच्छे दिन के रूप में देखते हैं। कविता का स्वर कई रंगों में व्यक्त हुआ है। कविता देखिए और गुनगुनाइए-

''जानवरों ने सभा बुलाई,
सबने 'वन' की बात उठाई।।
कब होगा स्मार्ट ये जंगल?
हम कब मौज उड़ाएँगे?
पीएम जी ने दिया भरोसा,
सबके दिन अच्छे आएँगे?
जंगल भर में मंगल होगा,
दिन बुरे टल जाएँगे
बहुरेंगे दिन शिक्षा के,
बिजली मुफ्त में पाएँगे।।

एक लाइब्रेरी भी होगी
जिसमें नंदन चंपक होंगी।
जंगल का अखबार चलेगा,
तब जंगल स्मार्ट बनेगा।''

बालमन के अप्रतिम हस्ताक्षर डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी ने बालकों की ग्रंथियों को अपनी कविताओं में जिस शिद्दत से सुलझाया है, वह काबिल-ए-तारीफ है। बाल्यावस्था में बच्चों का दायरा जिस संकुचन, झिझक में सिमटा रहता है। उन भावों को डॉ. सिरसवारी ने बारीकी से प्रस्तुत किया है। बच्चों के समग्र विकास में बालसाहित्य की सदैव से प्रमुख भूमिका रही है। बालसाहित्य बच्चों से सीधा संवाद स्थापित करने की विधा है। बालसाहित्य बच्चों की एक भरी-पूरी जीती-जागती दुनिया है। डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी बालसाहित्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण व विषय की गंभीरता के साथ-साथ रोचकता व मनोरंजकता का भी खासा ध्यान रखते हैं। डॉ. सिरसवारी का 8/8 के अध्ययन कक्ष में जहाँ एक ओर बालसाहित्य पर हजारों पुस्तकें हैं, तो दूसरी

तरफ दीवारों पर दंतुरित मुस्कान वाले बच्चों की अनेकानेक छवियाँ लगी हैं। बचपन और बचपन की मनोदशा पर आधारित डॉ. सिरसवारी की यह कविता सटीक बैठती है-

''गरमी की चल पड़ी हवाएँ,
बच्चे जाकर ताल नहाएँ।
बागों में वे खेलें-कूदें,
धमा-चौकड़ा खूब मचाएँ।
पंखा-कूलर खूब चलाते,
फिर भी गरमी लगती है।
आईसक्रीम व कुल्फी खाकर,
तब ही राहत मिलती है।
गर्मी की चल रही छुट्टियाँ
यात्रा का कुछ प्लान बनाएँ।
कैमरे में कैद करें सब,
हर पल को इन 'याद' बनाएँ।।''

डॉ. सिरसवारी आज के विज्ञापनों से, दिखावों से परेशान नजर आते हैं। उनकी पेशानी पर यह परेशानी साफ झलकती है। बालकवि का मन उस समय व्यथित हो जाता है, जब बच्चा पुस्तकों की चर्चा को छोड़कर बाकी सब पर ध्यान देता है। जनसत्ता में प्रकाशित अपने आलेख में डॉ. सिरसवारी ने लिखा है, ''आजकल ऐसे विज्ञापन और दूसरी चीजें ऐसे दिखाई जाती हैं, जिनमें बच्चा कार खरीदने से लेकर, घर, कपड़ों, मोबाइल, जूतों का ब्रांड तय करने में माता-पिता को सलाह देता है। लेकिन किताब खरीदने के बारे में शायद ही कोई विज्ञापन बनता हो। कुछ देशों में तो बच्चे कम उम्र से ही डाइटिंग कर रहे हैं। रियलिटी शो की तरह बात करना सीख रहे हैं, मगर साहित्य पढ़ने की कोई समझ उनके भीतर विकसित नहीं की जा रही है।''

डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी की कविताएँ बालमन की मीमांसा करने में सक्षम हैं। बालग्रंथियों को कितनी बारीकी से सिरसवारी जी ने सुलझाया है, यह उनकी बाल कविताओं के अध्ययन से पता चलता है। उनकी कविताएँ बालमन के नजदीक पहुँचती हैं। बालमन के माध्यम से सिरसवारी जी ने उन प्रारंभिक बिंदुओं को अपनी कविताओं में तरजीह दी है जिसके लिए बच्चे जिद करते हैं। इसी बालमन को पढ़कर-समझकर सिरसवारी जी ने काव्यात्मक सृजन किया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी का बाल काव्य संग्रह 'स्मार्ट जंगल' बच्चों को पूरी तरह प्रभावित करने में सक्षम है। उनके लियाकत को बढ़ाने में एक कदम और आगे की चीज है। इस संग्रह की एक-एक कविता बालमन पर प्रभाव डालती है और बच्चे खेल-खेल में इन कविताओं का रसास्वादन कर सकेंगे। अंततः बालमनोविज्ञान के युवा कवि डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी अपनी कविताओं से बालमन को लेकर चिंतित हैं। बाल्यावस्था के बच्चों को मोबाइल से दूर खेल के मैदानों में देखना चाहते हैं। डॉ. सिरसवारी का मानना है कि बच्चे जितना सोशल साइट्स से दूर रहेंगे, उतना ही वे स्वस्थ और जागरूक तथा मजबूत बनेंगे।

बातूनी के दीये

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'
दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)

पात्र–राजेश (बातूनी), राजू भैया, भोलू, राधा आंटी, बिट्टू, बिन्नी, किशन चाचा, राजेश के पापा सुरेश

दृश्य-(मंच पर एकक बालक भोलू सर पर टोकरी लिए दीये बेचने निकला है)

भोलू- दीया ले लो दीया.....दीया ले लो दीया -(फिर वह एक जगह निराश होकर बैठ जाता है, अपने आप से कहता है- पूरा दिन बीता जा रहा है, एक भी दीया नहीं बिका।

फिर उठते हुए आवाज़ लगाता है- दीये ले लो दीये, दिवाली के दीये .....

बिन्नी- दरवाजा खोलकर बाहर आती है-रुको दीये वाले भैया ....

भोलू- हाँ हाँ, बोलो कितने दीये चाहिए?

(तभी बिन्नी की माँ राधा आंटी भी बाहर आ जाती हैं)

बिन्नी की मां - अरे बिन्नी क्यूँ बुला लिया इसे, नहीं चाहिए हमें दीये। बिजली की झालर लगा लेंगे। पाँच दीये पूजा में जला लेंगे, वो रखे ही हैं। जाओ हमें नहीं चाहिए दीये।

भोलू- जैसी आपकी मरजी (टोकरी उठाकर फिर दूसरी गलियों में आवाज लगाता है। दीये ले लो दीये..... दिवाली के दीये..... (कोई बाहर नहीं निकलता, वह एक चबूतरे पर बैठ जाता है) तभी...

राजेश उर्फ़ बातूनी-(दरवाजा खोलकर बाहर

आता है। वह भोलू का उदास चेहरा देखकर पूछता है), अरे भाई ये रोनी सूरत क्यों बना रखी है?

भोलू- क्या करूँ, बाबा ने इतनी मेहनत से दीये बनाए हैं, पूरा दिन बीता जा रहा है, धूप में घूमते-घूमते पर एक भी दीया नहीं बिका। उदास न होऊं तो क्या करूँ, अब तो मुझे रोना भी आ रहा है।

राजेश उर्फ़ बातूनी- हैं हैं हैं (हँसते हुए) दीये ले लो दीये..... ऐसे तो तूने बेच लिए दीये। अरे आजकल जमाना विज्ञापन का हैं जो जितना रंगरोगन लगाकर बेचेगा उसका सामान उतना ही जल्दी बिकेगा और रद्दी और घटिया सामान भी अच्छी सुन्दर पैकिंग में विज्ञापन के जरिए बिक जाता है, जैसे एक अगरबत्ती के पैकेट में एक माचिस फ्री! ग्राहकों को थोड़ा लालच देना पड़ता है। समझे वैसे तेरा नाम क्या है?

भोलू- मेरा नाम भोलू है।

बातूनी- तू सचमुच भोलू है। अच्छा चल मैं तेरे साथ दीये बेचने चलता हूँ। पहले थोड़ा तू पानी पी ले। तू दिन भर से आवाज़ लगाकर थक गया होगा। और मेरा नाम राजेश है पर तेरे साथ दीये बेचने चलता हूँ तो अब मेरा नाम बातूनी है समझ गए?

भोलू- अरे नहीं भाई कहाँ तुम और कहाँ मैं?

बातूनी- अरे भाई ये सब बातें छोड़ो, ये तो बताओ टोकरी में क्या क्या है?

भोलू- 3 सैकड़ा दिए, 4 गुल्लक, 5 बड़े दीये, एक ग्वालिन।

बातूनी- वाह! सामान तो बहुत सुन्दर है, किसने बनाया है?

भोलू- मेरे बाबा ने।

बातूनी- अच्छा, बाबा क्यों नहीं आए?

भोलू- वो चल नहीं सकते, उनके दोनों पैर नहीं हैं।

बातूनी- ओफ्फ! और कौन है घर में?

भोलू- कोई नहीं, मां तो पहले ही चली गई भगवान के घर में।

भोलू- कोई बात नहीं, भगवान तो सबके साथ हमेशा रहता है। चलो अब चलते हैं। देख मेरे पास ये भोंपू है, तू इसे बजाना फिर मैं आवाज़ लगाऊंगा। दिखा जरा, तू अपना गमछा दे। मैं अच्छे से चेहरा ढांकते हुए लपेट लूँ ताकि मुझे कोई पहचान न सके।

(बातूनी ने चेहरा ढांकते हुए गमछा लपेट लिया है) फिर वह आवाज़ लगाता है और भोलू भोंपू बजाता है। भोंपू की आवाज़ इतनी मजेदार है की लोग सुनकर बाहर निकल आते हैं।

पचास के पचास दीये, वन टू थ्री, पचास पै पांच फ्री आइये आंटी आइये अंकल, दीये

नहीं मिलेंगे कल आइये पचास पै पांच फ्री

राधा आंटी- (दरवाजा खुलता है, बाहर आती हैं)- मन ही मन- ये आवाज जानी पहचानी सी क्यों लग रही है।

बातूनी- (गमछे से मुंह ढंकते हुए)- आइये आंटी दाम ना देखिये, दीये देखिये, ये हैं जादू के दिए, जलेंगे तो जलते ही रहेंगे।

राधा आंटी- जादू के दीये?

बातूनी- हाँ आंटी, जादु चिराग हैं ये, पानी से नहीं मेहनत के पसीने से बने हैं।

राधा आंटी- अरे तू तो बड़ा बातूनी है।

बातूनी- मेरा तो नाम ही बातूनी है।

राधा आंटी- अच्छा दे दो पचास दीये।

बातूनी- क्या आंटी, सौ लीजिए साल में एक ही बार तो लेना है फिर तो हमारी किस्मत में चने चबाना है, दे दो भोलू सौ दीये...

भोलू- ये दस-दस की दस गड्डी, पूरे सौ।

बातूनी- और ये लीजिये आंटी सौ पै दस दिए फ्री वन टू थ्री

राधा आंटी- (हँसते हुए) अच्छा लो बच्चों ये 100 रूपए, सुनो-दिवाली की मिठाई खाने जरूर आना।

भोलू- दीये की टोकरी सर पर रखते हुए खुश होता है। दोस्त बातूनी तुम तो वाकई समझदार हो। फिर वह भोंपू बजाता है- धुत्तुर धुत्तु धूं ....

बातूनी- दिवाली के दीये ले लो भैये, पानी ज्यादा पिए, तेल पिए कम।

जादू के दीये .....आइये, 100 पै दो बड़े दीये फ्री, वन टू थ्री... फिर ना कहना

खरीद न पाए जादू के दीये....100 के 100 ले लो भइये... वन टू थ्री, दो बड़े दिए फ्री

राजू भैया- अरे दीये वाले बच्चों, रुको भाई- हमें भी बताओ जादू के दीये, पानी ज्यादा पिए, तेल पिए कम, ऐसा कैसे?

बातूनी- सीधी-सीधी बात है भैया जी। तीन दिन तक पानी में डुबोकर दियों को पानी पिलाइये फिर तेल भरकर बाती जलाइए। दियों का पेट पहले ही पानी से भर जाएगा तो तेल कम पिएंगे ही, हैं ना जादू के दिए, जल्दी करिये भैये

राजू भैया- मान गए, बड़े बातूनी बच्चे हो तुम।

बातूनी- मेरा तो नाम ही बातूनी है।

राजू भैया- दे दो भाई सौ दीये

भोलू- (फटाफट गिनते हुए)- लो भैया 100 दीये

बातूनी- और ये लीजिये दो बड़े दिए फ्री, चल भोलू वन टू थ्री

राजू भैया- लो ये रहे 100 रूपए, दिवाली की मिठाई खाने जरूर आना बच्चों।

(राजू भैया-मन ही मन -ये आवाज़ जानी

पहचानी क्यों लग रही है?)

बातूनी- चल भैया भोलू

भोलू- बातूनी तुम तो सचमुच अपनी बातों से लोगों को आकर्षित कर लेते हो लेकिन अब तो नब्बे दीये ही बचे हैं।

बातूनी- ठीक है ना! उठाओ टोकरी- (फिर वो आवाज लगाता है और भोलू भोंपू बजाता है)

गुल्लक ले लो गुल्लक, जादू की गुल्लक, धन बरसेगा, मन हरसेगा

आओ बिट्टू...आओ बिन्नी-

बिट्टू और बिन्नी- (बाहर आते हैं)- अरे तुम लोगों को मेरा नाम कैसे पता है?

बातूनी- अरे मैंने तो तुक्का मारा था, क्या तुम्हारे सच में यही नाम हैं? अरे ये सब छोड़ो, नाम में क्या रखा है- ये देखो जादू की गुल्लक, इसके साथ एक बड़ा दीया फ्री।

बिट्टू-क्या सच में? मैं मां को बुलाता हूँ। मां ये देखो -जादू की रंगबिरंगी हाथी की शक्ल की गुल्लक साथ में दीया फ्री।

मां - भई वाह! कितने की है?

बातूनी- आम के आम गुठली के दाम! मात्र 25 रूपए में दोनों चीजें रखिये, शाम हो रही है, बाबा घर में रास्ता देखते होंगे।

बिट्टू की मां- अच्छा ये लो 25 रूपए, गुल्लक और दीया दे दो।

बातूनी- अरे आंटी, दिवाली पर दीया न जलाएंगी क्या?लीजिये 50 के 50, 50 पै 5 फ्री

बिट्टू की मां- (मन ही मन-ये आवाज़ जानी पहचानी क्यों लग रही है, इसकी बोली में कैसा सम्मोहन है, मन अनायास ही पिघला जा है)

भोलू - (इस बार भोलू ने तुक मिलाई) वन टू थ्री, 50 पै 5 फ्री -रखिये आंटी और हम बच्चों को आशीर्वाद दीजिये ताकि हम भी दिवाली में खूब मिठाई खाएं।

बिट्टू की मां- अच्छा लाओ बेटा, दे दो पचास दिए भी ...

बातूनी- ये हुई ना बात।

भोलू-अब तो मात्र 35 दीये ही बचे हैं, बातूनी

बातूनी- अभी अँधेरा नहीं हुआ है, चलो पीछे वाली फुलझोर कालोनी में चलते हैं। लेकिन भोलू, कहीं गमछा खुल गया तो सब पोल खुल जाएगी। सब जान पहचान के लोग हैं। खैर, देखा जाएगा! चल भैया, बजा अपना भोंपू- भोलू भोंपू बजाता है, धुत्तुर धुत्तुर धूं...

बातूनी- लो चाचा जादू की गुल्लक और पूजा की ग्वालिन, सब बिक गए आपके हिस्से के

बचे हैं। बाबू देखोगे, तो हो जाओगे बेकाबू। आओ चाचा एक ग्वालिन पै एक बड़ा दीया फ्री

भोलू-वन टू थ्री, एक बड़ा दीया फ्री-भोंपू बजाता है, धुत्तुर धुत्तुर धूं ....

चाचा- बच्चों दिखाओ तो तुम्हारी टोकरी में क्या-क्या है। अरे दीये तो बहुत कम हैं, कितने दीये हैं?

बातूनी- मोल भाव ना करिये, मात्र 35 बचे हैं, 35 के 35 ले लीजिये।

चाचा- गुल्लक तो बड़ी सुन्दर है, अच्छा ये तीनों गुल्लक और ग्वालिन भी दे दो।

बातूनी- अरे वाह! चाचा बड़ा दीया आपको फ्री

चाचा-कितना दे दूँ, हिसाब बता दो

बातूनी-160 रूपए हुए चाचा

चाचा- अब ये बड़े दिए कहाँ बेचते रहोगे ये भी दे दो।

बातूनी- जैसी आपकी मरजी।

चाचा- चलो 15 रूपए दीये के भी ले लो और सुनो बेटा राजेश तुम थक गए होंगे, दिन भर से दीये बेच रहे हो। मैंने तुम्हें छत से गमछा बांधते देख लिया था।

बातूनी-(चौंकते हुए) ऐं!

चाचा- हाँ बेटा, गमछा हटाओ

बातूनी- चाचा, पापा को ना बताइएगा, कहीं वे नाराज हुए तो

चाचा- नहीं बेटा, तुमने इस मासूम से दोस्त की इतनी मदद है, तुमसे कोई नाराज नहीं होगा।

तुमने तो अपने भोलू दोस्त को धंधा करना भी सिखा दिया। तभी वहां राजेश के पापा, सुरेश आ जाते हैं।

सुरेश - बेटा तुम यहाँ?

चाचा- दोस्त सुरेश, तुम्हारा बेटा राजेश तो बहुत होनहार और समझदार है। तुम नाहक कहा करते थे कि राजेश सिर्फ बातूनी है, लिखाई पढ़ाई नहीं करता, ना ही कुछ काम करता है। आज उसने दिए बेचने में जो मदद की है, वह कोई और नहीं कर सकता। उसे मेरी तरफ से दिवाली की मिठाई के साथ उसकी पसंद की गिफ्ट पक्की। भोलू की आँख से खुशी के आंसू टपकने लगते हैं।

सुरेश - हाँ किशन तुम सही कह रहे हो, सुरेश ने बातूनी को गले से लगाया और शाबाशी दी। मेरे बातूनी बच्चे, तुम्हारी बातों ने तो कमाल कर दिया।

!!! परदा गिरता है !!!!!

नवंबर आ गया

धीरेन्द्र द्विवेदी
देवरिया (उ. प्र.)

लो गुलाबी ठंड लेकर फिर नवंबर आ गया।।
बादलों की है विदाई बात यह समझा गया।।

गुनगुनी सी धूप सबको लग रही कितनी भली।
सेंकते हैं हम बदन पर है हवा ये मनचली।।

ठंड से सिहरी सुबह में हौसला अलसा गया।।
लो गुलाबी ठंड लेकर फिर नवंबर आ गया।।

ट्रंक से टोपी निकाली और मफलर गुलगुला।
हाफ स्वेटर बुन रही माँ नापती मुझको बुला।

फूल उसमें जो बना है मन को' मेरे भा गया।।
लो गुलाबी ठंड लेकर फिर नवंबर आ गया।।

खेत में लटकी हुई हैं धान की जो बालियाँ।
लग रहा बिखरी हुई हैं सूर्य की नव रश्मियाँ।।

यह खजाना काटने को अब कृषक है आ गया।।
लो गुलाबी ठंड लेकर फिर नवंबर आ गया।।

क्या किया है वर्ष भर अब यह बताने का समय।
अवसरों को यत्न कर अपना बनाने का समय।।

चक्र यह बदलाव का है बात यह समझा गया।।
लो गुलाबी ठंड लेकर फिर नवंबर आ गया।।

भूपसिंह 'भारती'
नारनौल (हरियाणा)

दीवाली

दीपों का त्योहार दीवाली।
लाये खुशी अपार दीवाली।।

इक दूजे को गले लगाओ,
प्यार से सरोबार दीवाली।

अंधेरे से प्रकाश की ओर,
लेकर जाये हमें दीवाली।

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई,
सब में बांटे प्यार दीवाली।

आतिशबाजी धूमधड़ाके से
दूर हो अबकी बार दीवाली।

आओ प्रदूषण मुक्त मनाए,
मिल करके इस बार दीवाली।

जीवन उज्ज्वल-सफल बनाओ

सूरज दादा! सुबह सवेरे
चले टहलने निकले।
किरनों का था उड़नखटोला
पहिए उजले-उजले।।

हुए लाल-पीले गुस्से से
देखे सोते बच्चे।
बोले- "ये संकेत नहीं हैं
बच्चों! बिल्कुल अच्छे।।

देखा है? स्लेबस कितना है!
कैसे याद करोगे?
सोते पड़े रहोगे अपना
कल बरबाद करोगे।।

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'
कर अधिकारी
जिला पंचायत बलरामपुर (उ. प्र.)

चलो उठो! अब मुँह धोओ
औ' पढ़ने में जुट जाओ।
उजियाली किरनों सा जीवन
उज्ज्वल सफल बनाओ।।

सुबह देर तक जो सोते हैं
भाग्य रूठ जाता है।
समय-डोर का सिरा टूटकर
कहीं छूट जाता है।।

पकड़ समय को श्रम करते जो
ये वसुधा उनकी है।
सोते रहने वालों की दुनिया में
क्या गिनती है?

जागो! जागो! बच्चों प्यारे!
सुन्दर समय न खोओ।
आया सूरज तुम्हें जगाने
सूरज जैसे होओ।।"

बाल साहित्य और बच्चे

राजकुमार जैन राजन
चित्रा प्रकाशन
आकोला (चित्तौड़गढ़), राजस्थान

यदि हम चाहते हैं कि देश का भविष्य उज्ज्वल हो तो हमें बालकों के व्यक्तित्व विकास की ओर ध्यान देना होगा क्योंकि आज के बच्चे ही कल देश के कर्णधार होंगे। बच्चों का जिज्ञासु मन कल्पना की उड़ान भरता है। उसके शांत मन में उथल-पुथल भी जारी रहती है। मन में उठते स्वभाविक सवालों अथवा जिज्ञासाओं को अभिभावक या अध्यापक अक्सर टाल जातें हैं। परिणामतः बच्चे के व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है और माता-पिता उस बालक के प्रथम शिक्षक। बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण का बीजारोपण परिवार से ही होता है। शिक्षित और संस्कारवान अभिभावक व शिक्षक बालकों में काफी हद तक संस्कार सृजन का प्रयास करते हैं। उनकी जिज्ञासाओं को शांत करते हैं। उन्हें संयमित और धैर्यवान बनने की प्रेरणा देते हैं। यह अभिभावक, शिक्षक तथा उनकी परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि वे बच्चे को किस सीमा तक विकसित कर पाते हैं।

आज गांव से लेकर शहरों तक मोबाइल, टी. वी., कम्प्यूटर, इंटरनेट ने बच्चों ओर बड़ों को अपने जाल में ऐसा जकड़ लिया है कि वे इसी में अपनी खुशियां ढूंढने में लगे हैं। इस कारण बच्चे तो जब देखो तब मोबाइल, टी. वी. या कम्प्यूटर स्क्रीन से चिपके ही नज़र आते हैं। नतीजतन उन्हें प्रतिदिन कई क्रूरता और हिंसक दृश्य देखने को मिल रहे हैं। निरन्तर इस तरह के दृश्यों को देखते हुए बच्चे संवेदनशून्य हो रहे हैं। वे हिंसक, आक्रामक, एकाकी और चिड़चिड़े हो रहे हैं। बच्चों ने बाहर मैदानों में खेलना छोड़ दिया है। रिश्तों का सम्मान करना उनके मन से समाप्त होता जा रहा है।

बच्चों के दिलों में उतरती हिंसा, बढ़ते अवसाद और खोते जा रहे मानवीय मूल्यों को नियंत्रित करने वाले नैतिक और मानवीय दायित्वों का न कोई अर्थ रह गया है न कोई संदर्भ। पैसा कमाकर सारी सुख-सुविधाएं जुटा लेने की एक अंधी दौड़ जारी है। अभिभावकों के पास बच्चों के लिए समय नहीं है। बच्चे घर में रहते हुए भी अकेले हैं। स्नेह और मार्गदर्शन के अभाव में उनमें नकारात्मक भाव खूब विकसित हो रहे हैं। ऐसे माहौल में हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि बच्चों का विचार तंत्र समुचित तरीके से विकसित हो। उनमें सोचने, समझने, अच्छे संस्कार पाने के लिए सद्साहित्य को पढ़ने के लिए ललक पैदा हो।

आज चैनलों पर, पत्र-पत्रिकाओं में, बाल साहित्य की गोष्ठियों और बाल कल्याण के आयोजनों में यह बहस अक्सर होती है कि नये समय और नये तकनीकी- विस्फोट ने बच्चों के लिए विचलित होने की परिस्थितियां पैदा की हैं। अब समय का चक्र पीछे तो नहीं मोड़ा जा सकता है। कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट, टी. वी., सिनेमा आदि के जरिये जो तरह-तरह की दुनिया खुलती है, उसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के भाव हैं। यहीं पर अभिभावक और शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इन बच्चों को स्नेह, साथ चाहिए... आपका सम्बल चाहिए। बच्चों के लिए आवश्यक संसाधन जुटा देना ही पर्याप्त नहीं है। उन्हें भावनात्मक व आत्मीय साथ भी चाहिए। बच्चों को समझाना होगा कि आभासी दुनिया और वास्तविक दुनिया में क्या फर्क है। उनमें मित्रता, सहभागिता, सहयोग, अनुशासन, आत्मविश्वास आदि के जरूरी बीज बोने होंगे और इस कार्य में "बालसाहित्य" ही अहम भूमिका निभा सकता है, निभा रहा हैं। बाल साहित्य बच्चों की कल्पनाशीलता तथा मानसिक क्षितिज को विकसित करने में सहायक होता है। बच्चों में बेहतर संस्कार एवम चरित्र निर्माण के साथ ही नई पीढ़ी के निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

'बाल साहित्य' से आशय बच्चों के लिए लिखा जाने वाला, बाल मनोविज्ञान की समझ के साथ बालमन की अभिव्यक्ति करने वाला साहित्य है। बाल साहित्य वही कहा जायेगा जिसमें बालकों के कोमल मन के साथ-साथ उनके परिवेश की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई हो। जिसे बालक सहज रूप

से पसंद करे। आज प्रचुर मात्रा में बालसाहित्य प्रकाशित हो रहा है। बावजूद इसके बच्चों तक 'उत्कृष्ट बालसाहित्य' नहीं पहुंच पा रहा है। इसके लिए सीधा-सीधा दोष पालकों, शिक्षकों व रचनाकारों का भी है।

अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को महंगे इलैक्ट्रोनिक खिलौने, गेम्स, कपड़े, टू मिनिट नूडल, लेज तो खरीद कर दे देते हैं लेकिन स्वस्थ मनोरंजन के लिए अच्छी बाल पत्रिकाएं अथवा पुस्तकें खरीद कर नहीं देते। बच्चों को जब किताबें उपहार में दी जाती हैं तो उन्हें एक अजीब किस्म के फीके से उत्साह से ही स्वीकार किया जाता है। जब प्रौढ़ आयु के अभिभावकों, शिक्षकों में ही पुस्तकों के पठन-पाठन की रुचि का अभाव है तो बालकों में पुस्तकों के पठन, पाठन के प्रति रुचि कैसे उत्पन्न की जा सकती है?विचारणीय है यह।

सबसे पहली आवश्यकता पठन-पाठन की परंपरा को एक आंदोलन के रूप में पुनर्जिवित करने की है। बालकों में पुस्तकों के प्रति रुचि नहीं है तो उनके प्रति वितृष्णा भी नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों के आस-पास इस तरह का वातावरण निर्मित किया जाए कि वे स्वतः पुस्तकों की ओर आकृष्ट हों, उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित हों। इसके लिए अभिभावकों, शिक्षकों, लेखकों, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवम स्वयमसेवी संस्थाओं द्वारा गांवों, शहरों में बालसाहित्य की गोष्ठियाँ आयोजित की जाएं। बच्चों की कार्यशालाएं आयोजित की जाएं। नई पुस्तकें पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित व पुरस्कृत किया जाए। वहीं अच्छे लेखकों, इस क्षेत्र में निःस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले व्यक्तियों, संस्थाओं को सम्मानित किया जाए।

इस तरह के प्रयास कही जगह हो भी रहे हैं, जो स्तुत्य हैं। यदि बालकों के हाथों में अच्छे बाल साहित्य की पुस्तकें होंगी तो एक पुस्तक-संस्कृति का विकास तो होगा ही, बच्चे भी पुस्तकों से दूर नहीं रह सकेंगे। हमें यह बात ध्यान में रखनी होगी कि बालसाहित्य नहीं रहा तो उसके रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी आज तक हस्तांतरित हो रही संस्कृति भी नहीं रहेगी और तब मानवता, समाज, राष्ट्र और हम...?बालसाहित्य के रूप में संजोए गए शिशु गीत, लोरियों, बालगीत, कविता, कहानियां, नाटक, संस्मरण, यात्रा वृतांत, लोक कथाएं रूपी अमूल्य धरोहर काल कवलित न हो जाए। आने वाली पीढ़ी के हाथों यह संपदा हमें सुरक्षित सौंपनी है।

एक दीवाली ऐसी भी

डॉ. रंजना जायसवाल
मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

बाजार और घर में दीपावली की बड़ी रौनक़ थी, दुकाने रंग-बिरंगी लाइट से जगमगा रही थी। लाल-पीले रंग की लाइट कितनी खूबसूरत थी। हर तरफ भीड़ ही भीड़ ऐसा लगता था कि पूरा शहर ही उमड़ आया था। कोरोना का प्रकोप अभी पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ था। घरों से निकलना कही न कहीं मजबूरी भी थी, आखिर इतना बड़ा त्योहार भी तो है। लोग मुँह पर मास्क लगाए बाजार में घूम रहे थे। मिठाई की दुकानों, कपड़े की दुकान हर जगह सिर्फ सर ही सर थे. ..खील, बताशे, गट्टा, चूड़ा और लईया के छोटे-छोटे पहाड़ बने हुए थे। बबलू यह सब देखकर बहुत खुश हो रहा था। मम्मी थोड़ी-थोड़ी देर पर सेनेटाइजर से अपना और बबलू का हाथ साफ करवा देती थी। पापा ने बबलू की उंगली कसकर पकड़ रखी थी, उन्हें डर था कि नन्हा बबलू भीड़ में कहीं गुम न हो जाये पर बबलू को हमेशा लगता कि अब वो बड़ा हो गया है।

मम्मी ने पूजा के लिए गणेश-लक्ष्मी की मूर्ति, स्टील के बर्तन, चांदी का एक सिक्का और सजावट का सामान खरीदा और बबलू ने पापा और मम्मी के साथ नये-नये कपड़े, मिठाईयां और ढेर सारे पटाखे खरीदे। वो गोल-गोल घूमने वाली चरखी, आसमान को छूता रॉकेट वो रंग-बिरंगी रौशनी छोड़ने वाले अनार और वो लम्बी वाली चटाई भी... बबलू सोच-सोचकर खुश हो रहा था। मुहल्ले के बच्चों के ऊपर कितना अच्छा रूआब पड़ेगा, जब वो अपने पटाखे की पोटली खोलेगा। खासकर बड़े भैया कल जो

पैराशूट लेकर आया, उसे देखकर सब की आँखें फ़टी की फटी रह जायेगी और ठाँय-ठाँय करती बन्दूक की आवाज को सुनकर सोनू और गोलू तो निश्चित ही डर जायेंगे। बाजार से लौटते-लौटते काफी देर हो गई थी, बबलू काफी थक गया था। मम्मी ने जल्दी-जल्दी कपड़े बदले और बबलू को खाना खाने को दिया।

''बबलू! कल छोटी दीवाली और परसों बड़ी दीवाली है...तुम कल ही अपना सारा होमवर्क पूरा कर लेना, वरना बाद में बहुत परेशानी होगी फिर मुझसे मत कहना कि मम्मी ने ठीक से त्योहार भी मनाने नहीं दिया।"

बबलू जानता था सारी बातें एक तरफ और पढ़ाई एक तरफ वैसे भी कोरोना की वजह से उसकी पढ़ाई का कितना नुकसान हो गया था। लापरवाही ठीक नहीं मम्मी गलत तो नहीं कह रही थी..

''मम्मी! मैं कल सारा होमवर्क पूरा कर लूँगा, आप चिंता न करो।"

मम्मी के चेहरे पर एक मुस्कान आ गई, बबलू मम्मी से प्रॉमिस करके सो गया। आज छोटी दीपावली थी पूरे घर में पकवान बनने की खुशबू आ रही थी। मम्मी सबका कितना ध्यान रखती थी, कोई भी त्योहार हो वो तरह-तरह की चीज़ें बनाती थी। मम्मी के हाथों का गुलाब जामुन उसे बहुत पसंद था। मम्मी गीता आंटी के साथ मठरी बना रही थी, गीता आंटी बबलू के यहाँ झाड़ू-पोछे का काम करती थी, मम्मी को जब भी जरूरत होती थी तब वो उन्हें मदद के लिए बुला लेती। बबलू उन्हें हमेशा आंटी ही कहता था, वो भी उसको कितना प्यार करती थी। गीता आंटी आज अपने बेटे को भी लेकर आई थी। कृष्णा बबलू की ही उम्र का था, मम्मी अक्सर उसके पुराने कपड़े कृष्णा को पहनने को दे देती थी। बबलू जल्दी-जल्दी अपना होमवर्क पूरा करने में लगा हुआ था।

''माँ-माँ! देखो न हिंदी वाली टीचर ने ये कितनी कठिन कविता याद करने को दे दी है, मुझे तो याद ही नहीं हो रही है।"

बबलू न जाने क्यों झुंझला सा गया था,

''क्या हुआ बबलू! तुम इतना परेशान क्यो हो रहे हो, लाओ मुझे दिखाओ...अरे ये तो गोपाल दास नीरज जी की कविता है। कितनी सुंदर कविता है..

''जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना,
अंधेरा धरा पर कही रह न जाये।
नई ज्योति के धर नए पंख झिलमिल
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले
लगे रौशनी की झड़ी झूम ऐसी
निशा की गली में तिमिर राह भूले।"

बबलू आश्चर्य से मम्मी को देख रहा था, मम्मी ने एक सांस में कविता पढ़ डाली। मम्मी ने गैस की आंच धीमी करी और बबलू की तरफ देखकर कहा-

"किसी भी कविता को अच्छी तरह याद करना और समझना हो तो उसका अर्थ अवश्य जानो, एक बार अगर तुम्हें इसका अर्थ समझ आ जायेगा तो तुम्हारे लिए कविता कंठस्थ करना आसान हो जायेगा। इस कविता में कवि कहना चाहता है कि इंसान को हमेशा ऐसे कार्य करना चाहिए जिससे सबका भला हो और इस धरती पर किसी भी तरह का दुख रूपी अंधकार न रहे। हर तरफ सत्य और सदाचार का ऐसा बोलबाला रहे कि दुख रूपी अंधकार भी रास्ता भूल जाये।"

बबलू आश्चर्य से मम्मी का चेहरा देख रहा था, मम्मी ने कितनी आसानी से इतनी कठिन कविता को आसानी से समझा दिया। अब तो वो चुटकियों में इसे याद कर लेगा।

कृष्णा बबलू को देखकर बहुत खुश हो गया,

"गीता आंटी! आज आप कृष्णा को लेकर आई है।"

"हाँ बबलू! त्योहार है न ...तुम्हारी मम्मी से पैसे लेने आई थी। यहाँ से काम करके बाज़ार जाऊँगी।"

"अरे वाह! आज तो कृष्णा के लिए नये-नये कपड़े और पटाखे आयेंगे।"

बबलू की बात सुनकर कृष्णा का चेहरा उतर गया,

"बेटा इतनी महंगाई है, इस कोरोना में कृष्णा के पापा की नौकरी भी छूट गई। मैं जितना कमाती हूँ उससे पेट भर जाये वही बहुत है। तुम्हारी मम्मी ने आज सुबह ही तुम्हारे कपड़े दिए है, कृष्णा दीवाली के दिन वही पहनेगा।"

...और पटाखे तो क्या कृष्णा पटाखे नहीं चलायेगा। आखिर उसका भी तो मन करता होगा कि वो और बच्चों की तरह पटाखे चलाये। बबलू सोचता-सोचता अपने कमरे में चला गया, थोड़ी देर बाद वो किचन में आया तो उसके हाथ में एक कागज की थैली थी।

"कृष्णा! ये लो तुम्हारे लिए पटाखे...पर हाँ याद रखना ये पटाखे गीता आंटी या अपने पापा के साथ मिलकर ही जलाना, ऐसा न हो कि तुम्हारे हाथ पैर जल जाएं। हैप्पी दीवाली..."

कृष्णा खुशी से झूम उठा, मम्मी आश्चर्य से बबलू को देख रही थी, बबलू को सचमुच में कविता का वास्तविक अर्थ समझ में आ गया था।

चक, चक मूंग्या घी की दाल

रामगोपाल राही लाखेरी
बूंदी (राजस्थान)

चक चक मूंग्या घी की दाल,
दिया जले सागर के पाल।
चिड़िया गयी समंदर को,
पाछी आयी-हो बेहाल।।

हरे पेड़ बिन धरा मलाल
पेड़ लगाओ सुधरे हाल।
प्राण वायु पेड़ों से मिलती,
सब पेड़ों का रखो ख्याल।।

चक चक मूंग्या घी की दाल
चक चक मूंग्या घी की दाल।।

चक चक मूंग्या घी की दाल
चक चक मूंग्या घी की दाल।।

तेज बड़ी घोड़े की चाल
ऊंट भागे करे कमाल।
सभी झांके देखे निरखे,
हाथी की मस्तानी चाल।।

विद्यालय का न्यारा हाल
खाओ चावल रोटी दाल।
पढ़ना लिखना बहुत जरूरी,
जीवन सुधरे, सुधरे हाल।।

हंसते, मुस्कुराते-बच्चे,
स्कूल जाते धीमी चाल।
गीत सुनाते, गाते-बोलें
चक चक मूंग्या घी की दाल।।

चक चक मूंग्या घी की दाल
चक चक मूंग्या घी की दाल।।

चक चक मूंग्या घी की दाल
चक चक मूंग्या घी की दाल।।

चक चक मूंग्या घी की दाल
चक चक मूंग्या घी की दाल।।

मोर नाचे बेसुर ताल
कौआ खूब बजावे गाल।
छत कबूतर करे गटरगूं
बिन तीतर के सूनो माल।।

बनिए से गौरैया बोली,
दे दे बनिए मूंग दाल।
बोला, चूहे खा पी गए,
बीत गए सब घी व दाल।।

चक चक मूंग्या घी की दाल
चक चक मूंग्या घी की दाल।।

चक चक मूंग्या घी की दाल
चक चक मूंग्या घी की दाल।।

अरुण गिजरे
ग्वालियर (म.प्र.)

भंवरा

भंवरा करता गुन गुन गुन
फूलों से कहता है सुन
कान लगा के सुनते हैं
सब भौंरे की मीठी धुन।

बाग बाग मे जाता है
यहां वहां मंडराता है
है बड़ा ही चंचल ये
चंचल है इसका मन।

मीठा मीठा गीत सुनाता
अपनी धुन मे उड़ जाता
देख देख कर तितली रानी
नाच रही है छुन छुन छुन।

हर फूल से करता प्यार
ये कभी ना माने हार
इस फूल से उस फूल
घूम रहा है अफलातून।

नही कभी भी घबराता है
हर शहर मे मिल जाता है
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण
क्या मथुरा क्या देहरादून।

ये संदेश

छोटे छोटे फूल खिले
और मुस्काई कलियां
भौंरे घूम रहे मस्ती मे
घूम रही हैं तितलियां।

मै पहुंचा उस सुंदर वन मे
तितली मुस्काकर बोली
आओ भैया तुम भी आओ
भर लो फूलों से झोली।

मैने कहा नही नही
मै फूल नही तोडूंगा
फूल तोड़ने से तो मैं
हरदम सबको रोकूंगा।

फूलों से मिलती शोभा
इस सुन्दर उपवन को
ये खुश्बू से भर देती है
लोगों के जीवन को।

सुनकर तितली रानी बोली
तुमने बिल्कुल ठीक कहा
फूलों की खुशबू से उपवन
देखो कितना महक रहा।

बाग बगीचों मे जाकर तुम
फूलों को कभी न तोड़ो
ये संदेश सभी को देना
कुदरत से नाता जोड़ो।

सदियों पुराना व्यंजन है केक

शिखर चंद जैन
कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

नए साल का जश्न हो, बर्थ डे पार्टी हो या पेरेन्ट्स की मैरिज एनीवर्सरी या फिर दोस्तों की तरफ से ट्रीट.. केक तो बनता है! केक का नाम सुनते ही मुंह में पानी भर आया न! कई स्वाद जीभ पर तैर गए होंगे। स्ट्रॉबेरी, ब्लैक फॉरेस्ट, चॉकलेट, पाइनेपल...। दोस्तों केक है ही ऐसी चीज।

'सदियों पुराना व्यंजन है केक'- केक कोई आज का व्यंजन नहीं है। इसकी शुरूआत तो दो हजार साल पहले ही हो गई थी। शुरूआती दिनों में केक मैदा, शहद, मेवे, अंडे, दूध एवं अन्य चीजों के मिश्रण से बनाए जाते थे। पहले केक बनाकर इनमें फल भी डाले जाते थे। मैदा इनमें मुख्य सामग्री हुआ करती थी। केक को पहले 'प्लेकॉडस' के नाम से जाना जाता था, जो ग्रीक शब्द 'प्लैट' से आया। बाद में ग्रीक निवासी बड़े और भारी केकों को 'सेटूरा' कहने लगे। उन दिनों केक इन्हीं नामों से जाने जाते थे। पुरातत्वविदों ने प्राचीन काल के गांवों में ऐसे साधारण केक पाए, जो जई या मक्का जैसे अनाजों को कूट कर, उन्हें नरम करके, फिर पकाकर तैयार किए जाते थे।

'ब्रिटेन में पहली बार'- ब्रिटेन में केक का प्रचलन 14 वीं शताब्दी के आसपास शुरू हुआ। इन्हें सिर्फ अमीर लोग ही खाया करते थे। यहां केकों को खूबसूरती से सजाया जाता था और शहर या कस्बे के धनी लोगों के लिए ही पेश किया जाता था। इन्हें बनाने के लिए मैदा, मसाले, क्रीम बटर, शहद, अंडे, खजूर, मुनक्का आदि का इस्तेमाल किया जाता था। ये केक हाथ से गोलाकार रूप में बनाए जाते थे। 17 वीं शताब्दी से केकों को बिल्कुल सही गोलाकार देने के लिए 'हूप' नामक लकड़ी या टिन के बने सांचों का प्रयोग किया जाने लगा।

एक ऐसा समय भी आया, जब दुनिया भर में केकों को पूजा-प्रसाद के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा। जैसे-रूस के लोग अपने ईष्ट देव को पतले केक 'ब्लीनी' चढ़ाकर श्रद्धा जताते थे। रोम के लोगों ने केक को नाम दिया, 'प्लैसेंटा'। वे इसे 'लीबम' भी कहते थे और इन्हें धार्मिक कार्यों में इस्तेमाल करते थे। प्लैसेंटा कुछ-कुछ चीज केक जैसा होता था।

'केक-ब्रेड में हुआ कन्फ्यूजन' - एक ऐसा पीरियड भी आया, जब केक और ब्रेड दोनों शब्द समानर्थी हो गए। कोई केक को ब्रेड, तो कोई ब्रेड को केक कह देता था। ये दोनों शब्द ग्रीक और अंग्रेजी भाषा के प्रभाव से बने। जब अमीर लोग ब्रेड को महंगी और स्वादिष्ट चीजों को मिलाकर बनवाते थे, तो इसे केक कहते थे। आज कुकीज का कुछ ऐसा ही रूप होता है। पहले केक एकदम गोलाकार नहीं होते थे, न ही उनमें बेकिंग सोडा और बेकिंग पाउडर डाला जाता था। ये इम्प्रूवमेंट काफी बाद में हुए हैं। शुरूआती दौर में तो ये अनाज से बनी, शहद, मेवे आदि से युक्त रोटियों जैसे ही होते थे। खाद्य विशेषज्ञों का मानना है कि प्राचीन मिस्र निवासी केक बेक करने की कला में पारंगत थे। मध्यकालीन यूरोप के लोग ऐसे फ्रूट केक और जिंजर ब्रेड बनाने में माहिर थे, जो महीने भर तक खराब नहीं होते थे। 17 वीं शताब्दी के मध्यकाल तक यूरोप वासी केक बनाने की कला में महारत हासिल कर चुके थे। इनके बनाए केक खूब विख्यात हुए और ये केक आधुनिक गोलाकार आइसिंग युक्त केकों की एक सीढ़ी पहले की श्रेणी में शामिल किए जा सकते हैं। दरअसल इस युग में अच्छी किस्म के ओवन, खाद्य सामग्री और रिफाइन की हुई चीनी उपलब्ध होने लगी थी।

ऐसे हुई पहली बार आइसिंग-केक पर जो पहली आइसिंग की गई थी-वह चीनी, अंडे की सफेदी एवं फ्लेवर्स का उबला हुआ मिश्रण था। इसके बाद से आइसिंग को केक पर ऊपर से डालकर केक को दोबारा ओवन में रखने की विधि शुरू हुई। केक को ओवन से निकालने पर आइसिंग सूखकर आकर्षक रूप से लेती है। समय बीतता गया और केक का रूप भी निखरता गया। केक का वर्तमान निखरा हुआ रूप 19 वीं सदी के मध्य तक सामने आया है। इसके स्वाद और रूप में सुधार खमीर की बजाय बेकिंग पाउडर और एक्स्ट्रा रिफाइंड मैटीरियल के कारण संभव हो सका है।

'हजारों किस्म के केक'- अब तो केक की हजारों किस्में बनाई जा सकती हैं। इसकी सैकड़ों रेसिपी तो सदियों पुरानी हैं। जापान में छोटे स्पंज केक को 'कासूटेरा' कहते हैं। उत्तर-पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमरीका में घर-घर में केक बनाने की परंपरा है। वहां आए दिन इनकी नई-नई रेसिपीज का आदान-प्रदान होता रहता है। बीसवीं सदी के मध्यकाल में अच्छा केक बनाने की कला गृहिणियों की अतिरिक्त कुशलता मानी जाती थी। पाश्चात्य देशों में तो केक बड़े चाव से खाए और बनाए जाते हैं।

अब तो भारत में भी बर्थडे पार्टी, शादियों में एवं अन्य खुशी के मौकों पर केक को मीठे के रूप में परोसा जाता है। दोस्त भी आपस में केक की 'ट्रीट' देते हैं।

खुशियाँ लेकर आई दीवाली

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती (उत्तर प्रदेश)

सूरज आज बहुत खुश था। उसके मन-मस्तिष्क में अपने पापा के सपने पूरे होने की उम्मीद फिर से जाग उठी थी। हाँ, निश्चय ही पापा यानी अपने बापू के देखे सपनों को वह पूरा करके दिखाएगा।

आज सूरज को अम्मा ने दीवाली के बाद स्कूल जाकर पढ़ाई करने को बता दिया। उसे तो जैसे पंख लग गए हों। सूरज अब पढ़ाई में जी-जान लगा देगा, और अपने पापा के सपनों को साकार करके ही दम लेगा। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, वो माँ को प्यार करने लगा।

सूरज की माँ भी आज खुश थी, वह भी अपने जिगर के टुकड़े बेटे सूरज को को बांह में लेकर प्यार करने लगी।

आज सूरज को दो वर्ष पूर्व की वे तमाम बातें सिनेमा की रील की तरह आँखों के सामने आने लगीं। बहुत-सी चीजें याद आ रही थीं। जब वह गाँव के प्राइमरी स्कूल से कक्षा पाँच का रिजल्ट लेकर घर आया था। सूरज बहुत खुश था। कक्षा में उसने टॉप किया था। अपने पिता को सूरज बापू कहता था। बैग जल्दी से चारपाई पर फेंककर वह माँ से लिपटते हुए बोला-

"अम्मा बापू कहाँ हैं?"

''क्यों क्या हुआ सूरज? तुम्हारे हाथ में यह कैसा कागज है?"

''अम्मा आज मेरा रिजल्ट मिला है, बापू को दिखाना है। मैं पास हो गया हूँ। कक्षा में मेरे सबसे अधिक नंबर आए हैं। मैंने स्कूल में टॉप किया है।"

''जुग जुग जिओ मेरे लाल। बापू का और खानदान का नाम रोशन करो।" सूरज की अम्मा ने कहा।"

''और हाँ, तुम्हारे बापू तालाब से मिट्टी लेने गए हैं, आते ही होंगे।"

सूरज का परिवार गाँव में रहता था। मिट्टी के दीये, कुल्हड़, खिलौने, घड़े, बर्तन आदि बनाने का उनका पुस्तैनी काम था। मिट्टी के दीये, कुल्हड़, खिलौने, घड़े, बर्तन आदि बनाकर गांव, बाजार में बेचते थे। उसी कार्य के लिए सूरज के पिता रामप्रकाश तालाब से मिट्टी लेने गए थे। यही इनकी आजीविका का साधन था। रामप्रकाश गरीब थे, पर बहुत ही परिश्रमी थे। साथ ही बड़े नेकदिल इंसान थे। पूरे गाँव में बहुत सीधे-साधे व्यक्ति के रूप में रामप्रकाश की पहचान थी। रामप्रकाश पाँचवी में पढ़ रहे थे कि पिता की असामयिक मृत्यु हो गई जिससे वे आगे नहीं पढ़ सके थे और घर की जिम्मेदारी बचपन से ही उनके कंधों पर आ पड़ी थी। रामप्रकाश अधिक नहीं पढ़ सके पर अपने इकलौते बेटे सूरज को आगे पढ़ा-लिखाकर एक अफसर बनाना चाहते थे। सूरज भी पढ़ने में बहुत होशियार था। हर कक्षा में अव्वल आता था।

तब तक रामप्रकाश मिट्टी लेकर आ गए। सूरज ने दौड़कर बापू के सिर से मिट्टी उतरवाई और अपने पिता से बोला-''बापू ये देखो मेरा रिजल्ट। आज मिला है।"

रिजल्ट देखकर रामप्रकाश बोले-''अरे वाह ! बेटे, तुमने तो फिर कमाल किया, तुमने पूरे कक्षा में टॉप किया है। कल बाजार बर्तन बेचने जाऊँगा और तुम्हारे लिए तुम्हारी पसंद की चीजें लेकर आऊँगा।"

अपनी पत्नी यशोदा से बोले-''देखो! मेरा बेटा पढ़ने में कितना अच्छा है। इस बार भी इसने टॉप किया है। इसे आगे खूब पढ़ाऊँगा। यह मेरी तरह मिट्टी के बर्तन नहीं बनाएगा बल्कि मेरा सपना है कि पढ़-लिखकर अफसर बने।"

सूरज की माँ यशोदा ने कहा-''पर गाँव के स्कूल में कक्षा पाँच तक ही पढ़ाई होती है। अगल-बगल के गाँव में आगे कक्षा में पढ़ाई के लिए सरकारी स्कूल नहीं है।"

''हाँ, ये बात तो है।" कुछ देर सोचने के बाद रामप्रकाश पत्नी यशोदा से बोले-''हाँ, इधर नजदीक कोई सरकारी स्कूल आगे पढ़ने के

लिए नहीं है। हम सोच रहे हैं कि अब हम सूरज को शहर के किसी प्राइवेट स्कूल में पढ़ाएं। इधर जो स्कूल की गाड़ी आती होगी, उसी से सूरज आया-जाया करेगा।"

यशोदा ने कहा-"पर हम गरीब हैं। प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने में फीस और कॉपी-किताब आदि में अधिक पैसा लगता है और ऊपर से स्कूल की बस से आने जाने का किराया।"

सूरज के पिता ने कहा-"हाँ, सही है कि प्राइवेट स्कूल में पैसा बहुत लगता है, पर क्या करें, इधर कोई स्कूल भी नहीं है। हम और मेहनत करेंगे पर सूरज को आगे पढ़ाएंगे। पढ़ने का मेरा सपना पूरा न हो सका, पर अपने बेटे सूरज को कुछ भी, कैसे भी करके पढ़ाएंगे।"

सूरज बहुत खुश था कि वह शहर के प्राइवेट स्कूल में पढ़ने जाएगा। खूब पढ़ेगा और अपने बापू के सपनों को पूरा करेगा।

स्कूल खुलते ही रामप्रकाश ने सूरज का एडमिशन शहर के एक अच्छे प्राइवेट स्कूल 'आर्य शिक्षा निकेतन' के कक्षा 6 में करा दिया। सूरज की ड्रेस, कॉपी, किताब सब खरीद दी। अब सूरज रोज स्कूल की बस से पढ़ने के लिए जाने लगा था। वह मन लगाकर पढ़ता था। उसके कई अच्छे दोस्त भी बन गए थे। स्कूल के शिक्षक भी सूरज को मानते थे। अभी दो तीन माह पढ़ाई का गुजरा ही था कि पूरे देश में न जाने कौन सी महामारी आ गई कि स्कूल बंद हो गए। सूरज का भी स्कूल जाना बंद हो गया। सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा कर दी। सब दुकानें ठप्प हो गईं। सूरज के पिता का कारोबार भी बंद हो गया। घर में रखे पैसे धीरे-धीरे खत्म हो रहे थे। लगभग साल भर सब बंद रहा। धीरे-धीरे स्थिति सामान्य होने लगी। स्कूल और बाजार खुले, पर यह सिलसिला तीन चार माह ही रहा। उसके बाद अचानक महामारी की दूसरी लहर आ गई, जो और भी खतरनाक साबित हुई। चारों तरफ हाहाकार मच गया। हर गाँव, हर मुहल्ले में लोग संक्रमण से प्रभावित होने लगे। बहुत लोग मौत के मुँह में चले गए। स्कूल, मार्केट सब बंद हो गए। पता नहीं कैसे सूरज के पिता भी महामारी की चपेट में आ गए। महीनों अस्पताल में भर्ती रहे पर बच न सके। सूरज के परिवार पर जैसे वज्रपात ही गिर पड़ा।

पाँच-छह माह बाद महामारी नियंत्रित होने पर एक बार फिर से स्थिति सामान्य हुई। घर की जिम्मेदारी रामप्रकाश की तरह अब सूरज और उसकी माँ के कंधों पर आ चुकी थी। सूरज और उसकी माँ ने मिलकर किसी तरह मिट्टी के बर्तन बनाना शुरू किए। बर्तनों को सूरज बाजार में ले जाकर बेचने लगा। सूरज का स्कूल जाना बंद हो गया। घर चलना ही मुश्किल था तो ऐसे में सूरज पढ़ता कैसे? वह अपने बैग और कॉपी-किताबों को देखता तो चुपचाप रोने लगता। सूरज की माँ उसे चुप कराती।

सूरज अपनी माँ से पूछता-''अम्मा भगवान ने ऐसा क्यों किया, बापू को हमसे क्यों छीन लिया। अब मैं पढ़ने नहीं जाऊँगा क्या?"

उसकी अम्मा बेचारी क्या जबाब देती बस! अपने और सूरज के आँसुओं को पोंछती रहती।

कहते हैं कि समय बीतते देर नहीं लगती है। समय करवट बदलता है। अगले माह दीवाली आने वाली है। दीयों और मिट्टी की बनी अन्य चीजों की मांग बढ़ गई। सूरज और उसकी माँ ने बहुत मेहनत कर अधिक मात्रा में दीये, लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति, गुल्लक और खिलौने आदि बनाए। अधिकतर बिक गए। बिक्री से अच्छा पैसा मिला।

सूरज की माँ ने सोच-विचार कर निर्णय लिया कि दीवाली के बाद सूरज के स्कूल की फीस जमाकर सूरज को अब पढ़ने के लिए भेजें। पढ़ाई के बाद वह दुकान के काम में सहायता किया करेगा। पर अब सूरज पढ़ेगा।

यशोदा ने सूरज को बुलाया-''बेटा सूरज ! दीवाली के बाद तुम पढ़ने जाओगे।"

''क्या... क्या कह रही हो अम्मा... फिर से एक बार बोलो" हाँ, अब तुम दीवाली के बाद अपने उसी स्कूल में पढ़ने जाओगे।" उसकी अम्मा ने दुहराया।

सूरज की खुशी का ठिकाना न रहा। वह अपनी माँ से लिपट गया-''अम्मा सच कह रही हो, अब मैं पढ़ने जाऊँगा?"

''हाँ, बेटा ! तुम्हारे बापू के चले जाने से हमारी सारी खुशियों को ग्रहण लग गया था। उनकी कमी कभी नहीं पूरी होगी। पर इस दीवाली में इतनी बढ़िया बिक्री हुई है कि आसानी से तुम्हारी फीस भरकर पढ़ने के लिए तुम्हें भेज सकूँगी।"

''अम्मा आज मैं बहुत खुश हूँ। मैं स्कूल जाऊँगा। सच में अम्मा, मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। पढ़-लिखकर अफसर बनूँगा और बापू का सपना पूरा करूँगा। ये दीवाली हमारे लिए खुशियाँ लेकर आई है।" इतना कहकर सूरज अम्मा से लिपट गया। माँ और बेटे दोनों की आँखों से आँसू बहने लगे।

शरद ऋतु मस्ताई

डॉ. राकेश चक्र
मुरादाबाद (उ.प्र.)

गरमी, वर्षा चले सैर को
शरद ऋतु मस्ताई।
सूरज जी भी थके-थके से
खाएँ दूध मलाई।।

मौसम अतिशय प्यारा न्यारा
ना गर्मी, ना ठंडा।
तन-मन को यह लगे सुखारी
लू का चले न डंडा।

रात हो गईं शीतल-शीतल
चादर हमें उड़ाई।।

पंछी सारे खुश होकर के
गाएं गीत मल्हार।
मिल-जुल कर आपस में रहते
खूब बढ़ाएं प्यार।

सुबह-शाम है बड़ी सुहानी
पवन लगे सुखदाई।।

हल्दी पर यौवन है छाया
पका धान औ मक्का।
कृषक काटते पकी फसल को
हँसते कक्की-कक्का।

ज्वार, बाजरा झूमें पककर
ईख पर मस्ती छाई।

हवा झुलाए डाल-पात को
देख नृत्य मन मोहता।
मोर मोरनी करें किलोलें
गीत सुनाए तोता।

खेलें-कूदें योग करें हम
स्वस्थ बनें हम भाई।।

सर्दी आई

ज़रा सँभल कर रहना भाई
मौसम बदला सर्दी आई

बंदर टोपी मफलर मोजे
दस्ताने शॉलें स्वेटर
संदूकों से निकल निकल अब
अलमारी को देंगे भर

निशा कोठारी
कोलकाता
(पश्चिम बंगाल)

चादर छोड़ सभी ओढ़ेंगे
मोटी कम्बल और रजाई
मौसम बदला सर्दी आई

गरम पकौड़े हलवा पूरी
भाजी पाव बनायेंगे
आलू गोभी मेथी पालक
भरे परांठे खायेंगे

सूप चाय काफी है पर
आईसक्रीम की रोक लगाई
मौसम बदला सर्दी आई

बैडमिंटन फुटबॉल क्रिकेट
बच्चे खेलेंगे हिलमिल
पिकनिक के प्रोग्राम बनेंगे
दिल सबके जायेंगे खिल

धूप सेकती नानी-दादी
लेकर अपनी ऊन सिलाई
मौसम बदला सर्दी आई

चाचा नेहरू बड़े ही प्यारे

अहिबरन पटेल
जांजगीर चाम्पा
(छत्तीसगढ़)

चाचा नेहरू बड़े ही प्यारे
सबके मन को भाते
हाथ मे बच्चे गुलाब लेकर
मन्द-मन्द मुस्काते

चाचा नेहरू रोज सिखाते
बच्चों तुम खूब पढ़ना
माँ भारती के वीर सिपाही
हम सबको है बनना

यह देश हमारा सबसे प्यारा
नही किसी से झगड़ना
मिलजुल के रहना है सबको
दुनिया से आगे है बढ़ना

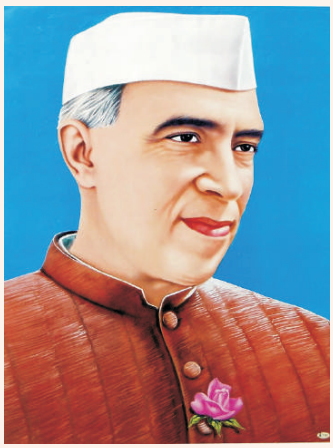

आओ मिलकर एक सपथ ले
भारत को स्वच्छ बनाना है
हम माँ भारती के वीर सिपाही
अपना कर्तव्य निभाना है

चाचा नेहरू का यह संदेश
सभी जगह फैलाना
जन जन को यह पता चले
भारत को स्वर्ग बनाना

बलदाऊ राम साहू
दुर्ग (छत्तीसगढ़)

अनोखी शादी

ढोल, नगाड़े, डफली बाजे
तासे, डमरू, लेकर नाचे
नाचे - नाचे बंदर भैया
दोहा गाए और सवैया।

हुई जंगल में शादी भाई
बज रही है खूब शहनाई
शेर भी आया भालू आया
सबने अपना नाच दिखाया।

हिरनी माला लेकर आई
हिरन को माला पहनाई
कोई आकर फूल बरसाये
कोई मंगल गीत सुनाये।

हुई अनोखी शादी भाई
सबने हँसकर दी बधाई।
गदहे घोड़े और सियार
लूटा रहे हैं सबको प्यार।

ढाबे वाला बबलू

डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी
चंदौसी (उ.प्र.)

अलीगढ़ जिले में स्थित अतरौली राजनीति का केंद्र होने से इसकी प्रसिद्धि देशभर में है। यहीं अतरौली के पास नेशनल हाइवे पर 'गुप्ता ढाबा' था। बबलू यहीं काम करता था। काम न करता तो क्या करता? कुछ दिन पहले उसके पिताजी का कोरोना महामारी से निधन हो गया था। बबलू की उम्र 12 वर्ष की थी। दो छोटी बहनों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी उसके ऊपर जो थी। माँ अक्सर बीमार ही रहती थीं। पड़ोस के चाचाजी ने ही उसकी हालत को देखकर ढाबे पर काम दिलवा दिया था और ईमानदारी से काम करने की नसीहत दी।

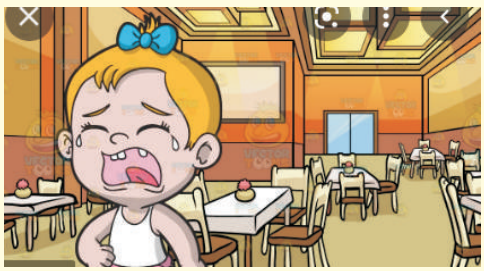

उसके माता-पिता ने उसे बड़े नाज से पाला था। अच्छे संस्कार दिए थे। विद्यालय में पढ़ने में बड़ा होशियार था। लेकिन पिता के निधन के बाद उसके डॉक्टर बनने के सारे सपने चकनाचूर हो गए थे। अब अपनी छोटी बहनों का अच्छे से पालन करना, पढ़ाना और उनकी शादी करना, यही उसके जीवन का लक्ष्य था।

पिताजी ने निधन के समय उससे वचन लिया था, "बेटा, तुमसे बड़ी उम्मीदें हैं। अपनी बहनों का ध्यान रखना। मेहनत मजदूरी करना, लेकिन गलत काम मत करना। बुरी संगत से दूर ही रहना।" यह कहते हुए दम तोड़ दिया था।

माँ की भी यही हिदायत थी, "कुछ भी हो जाए, बेटा ! हम रूखी-सूखी खा लेंगे, लेकिन तुम अपना ईमान मत डिगाना। जिसने हमें पैदा किया है, इस संसार में भेजा है, वह पेट भी भरेगा।"

बबलू ढाबे पर बड़ी ही लगन से काम करता था। उसका मालिक उससे बेहद खुश रहता था। बबलू ढाबे पर आने वाले प्रत्येक ग्राहक को संतुष्टि से भोजन कराता और देखभाल करता था। सुबह 10 बजे आना, शाम को 10 बजे जाना, यह उसकी दिनचर्या थी। इससे परिवार का अच्छे से पालन- पोषण चल रहा था।

उसकी बहन पूनम और रानी क्रमशः 9 साल, 11 साल की थल्ल। कोरोना के कारण विद्यालय बंद हो गए थे। उसने बहनों के लिए कोचिंग की व्यवस्था घर पर ही कर दी थी।

आगरा-मुरादाबाद हाइवे पर इकलौता 'गुप्ता ढाबा' होने से यहाँ रोडवेज बसें अक्सर रुकती थीं। बहुत भीड़ रहती थी। रोजाना चलने वाली कई सवारियों से उसके अच्छे संबंध हो गए थे। एक व्यक्ति ने तो उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर नया मोबाइल ही दे दिया, ''बबलू, मेरा हर सप्ताह आना होता है। ड्यूटी पर आना, निकलना। कभी-कभी भोजन समय से नहीं मिल पाता है। मैं तुमको फोन कर दिया करूँगा, तुम मेरी भोजन की प्लेट तैयार रख लिया करना।''

''कभी हो सकता है कि पैक कराना पड़ जाए। तुम पर भरोसा है, इसलिए तुमको नंबर दे रहा हूँ।''

''जी, बाबूजी। आपका ध्यान रखूंगा।''

इस तरह बबलू डेली ड्यूटी आने-जाने वालों की आँखों का तारा बन गया था।

जाड़े का मौसम शुरू हो गया था। शाम होते ही कोहरा आ जाता था। लेकिन बबलू को तो अपने ग्राहक देखने ही होते थे। उनकी सेवा-सत्कार। फिर ड्यूटी से निवृत्त होकर घर भी जाना होता था।

माँ का इलाज भी चल रहा था। उनकी दवाई लेकर जाना, उन्हें खाना बनाकर देना। इसी तरह उसकी जीवनचर्या चल रही थी।

एक दिन दी बात है। शाम का वक्त था। एक दिन अलीगढ़ से सहसवान (बदायूं) को जाने वाली बस वहाँ आकर रुकी। यात्रियों ने भोजन किया, करीब आधे घंटे बाद बस चल पड़ी।

देखते ही देखते बस आँखों से ओझल हो गई। बबलू ने बस को विदा किया और ढाबे में अंदर की ओर बढ़ा। उसने देखा कि एक टेबिल पर एक बैग रखा है। बबलू बैग देखकर सक-पका गया।

बैग को देखते ही पहचान गया, ''अरे ! यह तो प्रोफेसर साहब का बैग रह गया।'' कहते हुए उसने बैग अपने हाथ में उठा लिया। तभी होटल मालिक आ धमका, ''अरे बबलू, दिखाना क्या है बैग में।'' होटल मालिक ने कहा।

''कुछ नहीं बाबूजी। यह बैग प्रोफेसर साहब का है। मैं यह बैग उनको दे दूँगा। आप चिंता मत करिए।'' बबलू हकलाते हुए बोला।

''अरे बबलू, पता यह बैग उनका ही है। कुछ रुपए तुझे भी दे दूंगा, ला बेटा बैग।'' होटल मालिक गिड़गिड़ाते हुए बोला।

''नहीं बाबूजी, मैं बैग नहीं दूंगा। बबलू की

भौंहें तन गई थीं।

"अरे सोनू मोनू ! जल्दी आओ, बैग छीनो इससे.. यह ऐसे बैग देने वाला नहीं है।" होटल मालिक ने ऊपर बांह चढ़ाते हुए अपने नौकरों को बुलाया। तभी बबलू ने दौड़कर पास पड़े पत्थर के टुकड़े हाथ में उठा लिए, "खबरदार ! कोई मेरी ओर आगे बढ़ा। मेरी आप में से किसी से दुश्मनी नहीं है, लेकिन यह बैग मैं प्रोफेसर साहब को ही दूँगा।" बबलू ने कहा।

"अपने मालिक से लड़ेगा। तेरा पेट पालता हूँ बेटा। तुझे दो चार हजार रूपए दे दूँगा। ला, बैग मुझे दे दे।" होटल मालिक ने प्यार से बबलू को फुसलाते हुए कहा।

"नहीं बाबूजी, बैग तो नहीं दूँगा। भले कुछ हो जाए और मैं जा रहा हूँ, उनको देने। यह बैग उनको देकर ही आऊँगा। अगर कोई मेरे पीछे आया तो मैं पत्थर मार दूँगा।" और बबलू बदायूं की ओर दौड़ पड़ा।

बबलू बदायूं की ओर दौड़ता जा रहा था। होटल मालिक बबलू के इस पागलपन को देखकर दंग रह गया था। कहीं गुस्से में पत्थर न मार दे, इसलिए वह उसके पीछे नहीं गया। बबलू सांस लेता जाता और कमर पर बैग लटकाए दौड़ता जा रहा था। दौड़ते-दौड़ते उसे पता ही नहीं चला कि कब नरौरा-रामघाट मोड़ पर आ गया। यहीं पर एक मंदिर है, बबलू वहीं बैठ गया। उसने पहले पानी पिया, फिर मंदिर परिसर में लगे वृक्ष के नीचे बैठ गया। थोड़ा सुस्ताने के बाद उसने दिमाग लगाया कि वह दौड़े तो जा रहा है, लेकिन प्रोफेसर साहब का पता तो है ही नहीं, जिनका यह बैग है। उन्होंने एक बार केवल यह बताया था कि वह सहसवान में रहते हैं।

उसने बैग की ओर हाथ बढ़ाया, अपनी माँ के कहे वचन याद आ गए, "बेटा, कभी किसी की दौलत पर हाथ मत डालना।" उसने ईश्वर का नाम लिया और बैग खोला। उसमें दो-दो हजार की कई गड्डियां रखी थीं। एक तरफ जेवराथ रखे थे। बराबर में शादी के कार्ड रखे थे। उसने कार्ड देखा, उस पर नाम, पता सब लिखा था। वहीं एक कलम भी रखी थी।

बबलू ने कलम से अपने हाथ पर नाम और पता लिख लिया और बैग बंद कर कंधे पर लटकाकर नरौरा की ओर चल पड़ा। पता पूछते-पूछते गुन्नौर-दहगवां होते हुए पैदल ही उसने सहसवान तक का रास्ता पैदल ही तय किया। एक बोर्ड पर सहसवान नाम लिखा देख, उसके पैर थम गए। सामने कोतवाली थी। वहाँ कुछ देर रुका। पानी

पीया फिर एक फल की ठेल वाले से बैग के मालिक का गाँव का पता पूछा।

पता जानने के बाद बबलू गाँव की ओर मुड़ गया। बबलू मन में सोचता हुआ एक पगडंडी पर चलता जा रहा था। कब गाँव आ गया, उसे पता ही नहीं चला। गाँव के किनारे पर कुछ लोग आपस में बैठे बातें कर रहे थे। उसने प्रोफेसर साहब का नाम लेकर पता पूछा।

''अरे प्रोफेसर साहब के यहाँ ! आज उनकी बेटी की शादी है। जाओ, बेटा ! यह रास्ता सीधा प्रोफेसर साहब के यहाँ जाकर ही लगेगा।'' बड़े से तख्त पर बैठे हुए ताऊजी ने कहा।

बबलू आगे बढ़ गया। आज प्रोफेसर साहब की बेटी की शादी थी। वे अलीगढ़ बैंक से रुपए और जेवरात भरा बैग लेकर आए थे, लेकिन वह कहीं मिल नहीं रहा था। पूरे घर में बैग ढूंढ़ा जा रहा था। प्रोफेसर साहब भूल गए थे कि जहाँ उन्होंने खाना खाया, बैग वहाँ छूट गया है।

वर पक्ष की ओर से नकदी की मांग की जा रही थी। बेटी को जेवरात भी पहनना था। सब कुछ लेट हो रहा था। प्रोफेसर साहब के दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था। वे सिर पकड़कर एक ओर बैठ गए।

अचानक बबलू ने प्रोफेसर साहब के पैर छुए, ''बाबूजी आपका बैग... आज जल्दबाजी में आपका बैग वहीं होटल पर छूट गया था।''

प्रोफेसर साहब हक्का-बक्का थे, ''अरे बबलू तुम... थैंक गॉड... आज तुमने मेरी लाज बचा ली।'' प्रोफेसर साहब ने बबलू को सीने से लगा लिया। तभी प्रोफेसर साहब की श्रीमती जी दौड़ती हुई आईं, ''आज भी दुनिया में इंसानियत जिंदा है। कहीं न कहीं भगवान हैं, तुम जैसे बच्चों के रूप में।''

''रुको बेटा, मैं तुमको कुछ खाने के लिए लाती हूँ।'' श्रीमती जी ने बैग बेटे को पकड़ाया और खाने की थाली सजाने लगीं। प्रोफेसर साहब बबलू को बिठाकर दोस्तों की आव-भगत में लग गए थे।

बबलू के दिमाग में तमाम सवाल उमड़-घुमड़ रहे थे। प्रोफेसर साहब की श्रीमती जी खाने की थाली सजाकर लाईं, तब तक बबलू वहाँ से जा चुका था।

उसने अपने घर की ओर जाने वाली पगडंडी पकड़ ली थी। क्योंकि बहनों की पढ़ाई का खर्चा, उनके लिए कपड़े, माँ की दवाई.. दूसरी नौकरी की तलाश। इसी तरह के कई सवाल उसके दिमाग में चल रहे थे। क्योंकि उसके पिता की सीख थी, ''दूसरे के धन से केवल कुछ दिन की जिंदगी जी सकते हैं। लेकिन सही सकून तो अपनी मेहनत की कमाई में ही मिलता है।

दोस्ती की दिवाली

डॉ. मंजरी शुक्ला
पानीपत (हरियाणा)

"दिवाली पर चार दिनों के लिए मैं घर जा रही हूँ।" मिली ने चहकते हुए निशा से कहा।

निशा मुस्कुरा दी और बोली- "जल्दी लौट आना। वरना वो स्ट्रिक्ट वार्डन मुझे ही राकेट बनाकर आसमान में उड़ा देंगी।"

मिली इस बात पर इतना हँसी कि कॉरिडोर में देर उसकी तक हँसी गूंजती रही।

मिली अपने साथ निशा को भी दिवाली पर अपने घर ले जाना चाहती थी पर निशा के पलंग पर रखी महँगी घड़ी, नए कपड़े, सोने का ब्रेसलेट और ढेर सारे ड्राई फ्रूट्स के डिब्बे देखकर चुप रह गई।

उसने सोचा कि पापा की तीन महीने की तनख़्वाह में भी शायद इतना सामान ना आ पाए।

तभी मिली की मम्मी की आवाज़ आई-"लो भाई, हम आ गए लेने।"

"मम्मी!" कहते हुए मिली खुशी से चीख पड़ी और दौड़कर उनके गले लग गई।

निशा ने जब हाथ जोड़कर उन्हें नमस्ते किया तो मम्मी बोली-"बेटा, मिली बता रही थी कि तुम हॉस्टल में अकेले रहोगी। अगर तुम्हारी मम्मी कह दें तो तुम भी हमारे साथ चलो।"

उनकी बात सुनकर निशा का चेहरा खुशी से खिल उठा।

उसने झट से कुछ कपड़े और सामान एक बैग में डाले और बोली-''मम्मी ने तो पहले ही कहा था कि अगर तुम्हें कोई सहेली ले जाए तो चली जाना।"

मम्मी हँस दी और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेर दिया पर मिली का चेहरा फक्क पड़ गया।

उसने मम्मी से धीरे से कहा-''हमारे घर में तो सिर्फ़ दो कमरे हैं।"

पर मम्मी तो निशा के साथ किसी बात पर इतनी ज़ोर से ठहाका लगा रही थीं कि उन्होंने उसकी बात पर ध्यान ही नहीं दिया।

मिली तो उन दोनों के बीच ऐसी बैठी हुई थी मानो वह मम्मी से पहली बार मिल रही हो।

निशा ने मम्मी से पूछा-''आंटी, मेरे चलने से आपको कोई दिक्कत तो नहीं होगी?"

''अरे नहीं, किस बात की दिक्कत! तुम्हारे चलने से तो हम सब को बहुत खुशी होगी, आख़िर मिली तुम्हारी बेस्ट फ्रेंड है है ना।"

मिली ने मन में कहा-''बेस्ट फ्रेंड तो हूँ और मैं निशा को बहुत प्यार भी करती हूँ पर भगवान के लिए उसे घर मत ले कर चलो। मेरी इज्जत का फालूदा मत बनाओ। मैंने उसके घर की फोटो देखी है। उसका घर, घर नहीं है, महल है, किला है, राजभवन है और हमारा घर उसके घर के आगे कुछ नहीं है। पता नहीं मम्मी को क्या हो जाता है जिसे भी देखो अपने घर उठाकर ले चलती हैं। खाना खिला देती हैं। लोग दही बड़े की तारीफ़ करते हैं तो सड़क चलते आदमी के लिए भी तुरंत दाल भिगो देती हैं।

सोचते-सोचते मिली का दिमाग भन्ना उठा था।

तभी निशा ने मिली से पूछा-''क्या सोच रही है इतनी देर से?"

"नहीं-नहीं, कुछ नहीं मैं सोच रही हूँ कि अगर मैं भी नहीं जाती तो थोड़ी पढ़ाई हो जाती।"

"पागलों जैसी बातें मत करो" मम्मी ने प्यार से डाँटते हुए कहा, डांटा बच्चों के बिना भी भला हमें कहीं घर में कहीं दिवाली मनती है।"

बस में भी मिली सकुचाई सी बैठी रही। उसे निशा के मम्मी पापा का आना याद आया। जो हर बार नई चमचमाती हुई कार और सफ़ेद वर्दी पहने ड्राइवर के साथ आते थे।

वे लोग घर पहुँचे तो बाहर सड़क पर ही उसका छोटा भाई अज्जू अपने दोस्तों के साथ सप्तम सुर में चीखते हुए दौड़ लगा रहा था। गंदी बनियाइन और धूल से सने हुए उसके बाल देखकर मिली का दिमाग खराब हो गया।

उसे तुरंत निशा का भाई याद आ गया। जो करीने से बाल सँवारे हुए लाल रंग की टी शर्ट और नीली जींस में हॉस्टल आया था तो उसके सिर पर धूप से बचाव के लिए, एक आदमी उसके पीछे पीछे छाता लगाए चल रहा था।

दीदी! दीदी! करता हुआ अज्जू मिली के गले से लिपट गया। अगर निशा साथ ना होती तो मिली भी उसी के साथ गली में पागलों की तरह भागना शुरू कर देती पर आज तो मिली शर्म से पानी पानी हो गई।

वह उसे डांटती, उससे पहले ही मम्मी मुस्कुराते हुए बोली-"और ये तुम्हारी दूसरी दीदी हैं।"

"दूसरी दीदी" सुनते ही निशा ने आश्चर्य से मम्मी की और देखा और तुरंत घुटने के बल बैठते हुए अज्जू को प्यार से गले लगा लिया।

मम्मी अज्जू के धूल भरे बालों को झाड़ते हुए बोली-"सारा सर्कस घर के बाहर ही दिखा दोगे या घर के अंदर भी चलोगे?"

"चलो दीदी, मैं आपको अपना नया वाला क्रिकेट बैट दिखाऊं।"

मिली ने सोचा कि उसने कितनी बार एक सस्ता सा मोबाइल माँगा था। हॉस्टल में उसके अलावा सबके पास मोबाइल था। पर मम्मी हमेशा पैसे दिक्कत बताती रहीं और अज्जू को नया क्रिकेट बैट दिला दिया।

वह ये सब सोच ही रही थी, तभी उसे निशा की खिलखिलाती हुई हँसी सुनाई दी।

अज्जू एक हरा प्लास्टिक का क्रिकेट बैट पकड़े हुआ बॉल को मारने की कोशिश कर रहा था पर बैट इतना हल्का था कि बार बार मुड़ा जा रहा था।

मिली को अपनी सोच पर बहुत ग्लानि हुई। वाला बैट दिलाया होगा पर ये तो सामने वाली दुकान पर बिकने वाला मामूली सा बैट था जो एक बॉल तक को नहीं मार पा रहा था।

कहाँ तो वह समझ रही थी, पापा ने अज्जू को महंगा वाला बैट दिलाया होगा पर ये तो सामने वाली दुकान पर बिकने वाला मामूली सा बैट था जो एक बॉल तक को नहीं मार पा रहा था।

तभी मम्मी कमरे में आईं और बोली-''जल्दी से गरमा गर्म पूड़ी खा लो फ़िर हम सबको दिए पानी में भिगोने हैं।"

''पर आंटी, दिए तो पानी में बुझ जाएँगे ना।" निशा बोली

मम्मी हँसते हुए बोली-''दिवाली में मिट्टी के दिए जलाने से पहले पानी में इसलिए भिगो देते हैं ताकि मिट्टी पानी सोख ले और उसके बाद दिए तेल नहीं सोखेंगे।"

निशा ने आश्चर्य से कहा-''मुझे तो ये बात पता ही नहीं थी।"

''तुम्हारे घर में तो ये सारे काम नौकर चाकर करते हैं ना, इसलिए तुम्हें कैसे पता चलेगा?" मिली ने कुढ़ते हुए कहा

निशा मुस्कुराते हुए बोली-''मेरी तो हर दिवाली भी उन्हीं के साथ मनती है। मम्मी और पापा तो काम के कारण अधिकतर विदेश में ही रहते हैं।"

मिली ने देखा कि बात खत्म होते ही निशा की आवाज़ रूंध गई थी।

मम्मी जैसे सब समझ गई थी उन्होंने निशा को गले से लगा लिया।

निशा को रोते देख मम्मी की आँखें भी डबडबा गई थीं।

मम्मी ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए -''ये भी तुम्हारा ही घर है। जब भी मन हो चली आया करना।"

निशा ने अपनी आँखें पोंछी और मिली का हाथ पकड़ते हुए बोली-''मुझे आने से मन तो नहीं करोगी ना?"

मिली की रुलाई फूट पड़ी। निशा, मम्मी और अज्जू सब एक दूसरे से मिलकर कितना खुश थे, कितना हँस रहे थे, जो जैसा था वैसे ही व्यवहार कर रहा था और निशा को तो पिछले तीन साल में इतना खुश कभी नहीं देखा था।

सिर्फ़ वही निशा के घरवालों की अमीरी की तुलना अपने पापा के साथ कर के बेवजह ही खुद को हीन समझ रही थी और सबसे अलग थलग पड़ गई थी।

उसने निशा का हाथ मजबूती से पकड़ लिया और डबडबाती आँखों से बोली-''सिर्फ़ दिवाली ही क्यों, हम हर त्यौहार साथ में मनाएँगे।"

निशा रोते रोते हँस पड़ी।

मिली को लगा जैसे सारा कमरा ढेर सारी खुशियों से जगमगा उठा हो।

सतीश उपाध्याय
मनेंद्रगढ़ कोरिया
(छत्तीसगढ़)

पापा लाए

सोमवार को पापा लाए
मीठे मीठे आम।

मंगलवार को चाची गई
देखो तीरथ धाम।

बुधवार को मामा कहते
याद करो सब गीत।

गुरुवार को हमसे मिलते
सभी पुराने मीत।

शुक्रवार को नानी कहती
करना अच्छे काम ।

शनिवार को मम्मी बोली
खूब कमाओ नाम।

रविवार तो अपना साथी
देता सबको आराम।

बचपन

सबके मन को भाता बचपन
कितना हमें लुभाता बचपन।

भेदभाव की कड़वी बातें
कभी न मन में लाता बचपन।

अपनी भोली बातों से
सबको खूब हंसाता बचपन

सीख प्यार की सब को देकर
राह नई दिखलाता बचपन।

खेल खिलौनों की दुनिया में
खुश कितना हो जाता बचपन

फूलों सा मुस्कान बिखेरे
मन सबका हर्षता बचपन।

सीखें हम जीने का ढंग

श्रुति त्रिपाठी
बस्ती (उत्तर प्रदेश)

घटा कोरोना स्कूल चले,
महीनों बाद हम दोस्त मिले।
थोड़ा-थोड़ा पढ़ लेंगे,
थोड़ी मस्ती कर लेंगे।

मैडम व सर से आज मिले,
खुशियों से है दिल खिले।
घंटी बजी जोर से,
स्कूल गूंजा शोर से।

काकी ने रोटी बनायी,
हम सब ने मिलकर खायी।
मजा आ गया ऐसा स्वाद,
ताजी हो गई पुरानी याद।

मीना, सोनी और सुजीत,
टीम खूब रही है जीत।
मैं भी जोर से दौड़ूंगा,
सबको पीछे छोड़ूंगा।

शिक्षक अब हमको पढ़ा रहे,
ज्ञान का दीपक जला रहे।
अनुशासन व शिक्षा के संग,
सीखें हम जीने का ढंग।

डॉ. रमेश यादव
मुंबई (महाराष्ट्र)

दीपावली

दीपों की दीपावली आई
हर घर में खुशहाली छाई
सद्भभावना की रंगोली संग
उपहारों की सौगात है लाई

महालक्ष्मी की कृपा मिलती
सजती जब पूजा की थाली
माता सरस्वती के पूजन से
कटती अज्ञान की रात काली

लड़ियों की माला सजाकर
अंधियारा दूर भगाओ जी
मिठाइयों के सुस्वाद से
दिल में मिठास जगाओ जी

मिल जुलकर मित्रों संग
आतिशबाजी के भरो रंग
सावधान रहना मगर प्यारे
रंग कहीं हो जाए ना भंग

प्रकाश पर्व सबसे न्यारा
भाई-दूज का उत्सव प्यारा
संकल्पों के दीप जलाकर
फैलाओ चहुँओर उजियारा

डॉ. प्रतिभा कुमारी पराशर
वैशाली (बिहार)

चंदा मामा

चंदा मामा नीचे आना।
मेरी मैया को समझाना।
रोज खिलाती दूध-मलाई।
कहती चंदा मेरा भाई।।

पुआ पकाती मां है गुड़ के।
रोज खिलाती तोड़-तोड़ के।
करते हो जग को उजियारा।
दीप तले क्यों है अँधियारा।।

बिन कपड़े के रहते हो।
धूप-ठंड सब सहते हो।
बढ़ते-घटते रहते हो।
कथा-कहानी कहते हो।।

सारे जग के तुम हो मामा।
नहीं पहनते कभी पजामा।
जब भी भगिनी के घर आना।
रोज नये कपड़े सिलवाना।।

लालच बुरी बला

डॉ. अनीता पंडा
अतिथि-प्रवक्ता मार्टिन लूथर क्रिश्चियन विश्वविद्यालय शिलांग (मेघालय)

बरसात का मौसम था। तेज़ बारिश के साथ हवा भी चल रही थी। एक यात्री पानी में भीगता हुआ, छाया ढूँढ रहा था। सहसा उसे एक बड़ा मकान दिखाई दिया, जिसमें बरामदा भी था। वह बरामदे में पहुँचा और बारिश के रुकने का इंतजार करने लगा। बरसात तेज़ी से हो रही थी; रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। तूफान के कारण कई पेड़ रास्ते पर टूटकर गिर गए थे अतः आगे जाना भी मुश्किल था। भूख और ठण्ड के कारण उसका बुरा हाल था। कोई चारा न देखकर उसने घर का दरवाज़ा खटखटाया।

"कौन है ?" अन्दर से आवाज़ आई और एक संभ्रांत महिला ने दरवाज़ा खोला। उसने कीमती वस्त्र पहने थे। उसे देखकर यात्री ने कहा-क्या मैं आज रात आपके बरामदे में गुजर सकता हूँ ? इस तूफ़ान के कारण मैं आगे नहीं जा सकता। मुझे रुकने की अनुमति दे दीजिये। सुबह होने पर चला जाऊँगा। यह सुनते ही वह गुस्से में बोली - "नहीं, मैं किसी भी अजनबी को यहाँ रुकने की इज़ाजत नहीं दे सकती। तुम अभी यहाँ से निकल जाओ; नहीं तो मैं अपने कुत्ते को बुलाती हूँ।" यह कहते हुए उसने जोर से दरवाज़ा बंद कर लिया। लाचार होकर यात्री वहाँ से चल पड़ा।

कुछ दूर चलने पर उसे एक टूटी-फूटी झोपड़ी दिखाई दी। उसने दरवाज़ा खटखटाया। फटे-पुराने कपड़े पहने एक दुबली-पतली औरत ने दरवाज़ा खोला। उसके साथ चार छोटे-छोटे बच्चे भी थे, जिनके शरीर पर ढंग के कपड़े भी नहीं थे। उनके हालात अच्छे नहीं थे। यात्री ने उस औरत से एक रात उनके घर में काटने की प्रार्थना की। गरीब स्त्री खुशी-खुशी तैयार हो गई। उसने यात्री को आदरपूर्वक बिठाया। वे लोग खाना खा रहे थे। उस स्त्री ने यात्री को भी थोड़ा चावल और सब्जी देते हुए कहा-हम लोग बहुत गरीब हैं। हमारे पास इसके सिवाय आपको खिलाने के लिए और कुछ नहीं है। आपको

भूख लगी होगी कृपया कुछ खा लें।

यात्री उसके सादगी और सरलता से बहुत प्रभावित हुआ और बोला-धन्यवाद, आपने मेरे लिए इतना सोचा, यह बहुत बड़ी बात है पर मेरे पास भी कुछ खाने के लिए है, मैं उसे खा लूँगा। आप लोग खाना खा लें। यह कहकर उसने अपने थैले से फल निकाले। कुछ फल उसने बच्चों को दिया और खुद खाने लगा। बच्चे फल पाकर बहुत खुश हो गए।

सुबह हो गई। बारिश भी बंद हो गई और तूफ़ान थम गया। यात्री जाने के तैयार हो गया। यात्री के उठने के पहले ही गरीब स्त्री ने उसके लिए चाय बना लिया था। वह यात्री स्त्री का अनुरोध नहीं टाल सका। चाय पीकर वह जाने के लिए तैयार हो गया। उसने अपना सामान उठाया और स्त्री से कहा-मैं जा रहा हूँ पर आपने मेरी दिल से सहायता की इसलिए अगर आपको कोई एक चीज़ चाहिए, तो माँग लीजिये।

यह सुनकर गरीब स्त्री थोड़ी हिचकिचाई। कुछ देर सोचने के बाद वह बोली-अगर आप कुछ देना चाहते हैं, तो मेरी ओखली को अनाज से भर दें, जिससे मुझे और मेरे बच्चों को भूखा न रहना पड़े। ''जैसी आपकी इच्छा'' यात्री ने कहा और धन्यवाद देते हुए वहाँ से चल पड़ा।

घर की साफ़-सफाई करके गरीब स्त्री ओखली में अनाज कूटने बैठी। उसने ज़रूरत भर अनाज निकाला और खाना बनाया। सभी लोग खुश थे क्योंकि कई दिनों बाद उन्हें भरपेट खाना मिला था। शाम को खाना बनाने के लिए जब वह ओखली में से कूटा हुआ धान निकालने गई, तो आश्चर्यचकित हो गई उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसकी ओखली अनाज से पूरी तरह भरी थी। अगले दिन भी ऐसा ही हुआ। वह जितना धान निकालती जाती, उसकी ओखली में फिर से उतना भरता जाता। उसे बेचकर उनकी गरीबी दूर हो गई।

गरीब स्त्री की के समय बदलने की बात चारो ओर फ़ैल गई। जब यह बात धनी स्त्री को पता चली, तो वह गरीब स्त्री के घर पहुँची और उससे पूछा कि वह रातोरात कैसे धनी बन गई? इस पर भोली स्त्री ने सारी घटना बता दिया। सारी घटना सुनकर धनी स्त्री बहुत पछताई। घर आकर उसने नौकरों को आदेश दिया कि वे चारो ओर जाएँ और जहाँ भी वह यात्री मिले उसे सम्मान के साथ ले आएँ। किसी तरह वह यात्री मिला और बहुत मनाने के बाद साथ चलने के लिए तैयार हो गया।

जब वह यात्री धनी स्त्री के घर पहुँचा, तो

उसका खूब आदर-सत्कार किया गया। वह तीन दिन तक उसके घर में रहा। तीन दिन तक घर में रहने के कारण धनी मन ही मन कुढ़ रही थी वह तो उसके जाने का इंतजार कर रही थी। चौथे दिन सुबह-सुबह वह अपना सामान समेट कर चुपचाप जाने वाला था कि धनी स्त्री को यह बात पता चली। वह बहुत क्रोधित हुई उसने कहा- अरे ! आप बिना बताये जा रहें हैं ?आप यहाँ तीन दिनों तक रुके। कम से कम मुझसे मिलना और धन्यवाद देना भी ज़रूरी नहीं समझा। जाने से पहले कुछ तो कहते जाइए।

यह सुनकर यात्री मुस्कराया और बोला-अच्छा, आप जो काम सुबह-सुबह सबसे पहले करेंगी, वह सारे दिन भर करती रहेंगी। यह कहकर यात्री घर से निकल गया। धनी स्त्री बहुत खुश हुई। उसने सोचा कि वह सारे दिन तिज़ोरी में रुपये भरेगी। जैसे ही यात्री घर से निकला धनी स्त्री को जोरों से छींक आई। अब क्या था ? रुपये की बात तो दूर, वह पूरे दिन छींक-छींक कर बेहाल हो गई।

सच ही कहा गया कि सच्चे मन से की गई सेवा फलदाई होती है। लालच बुरी बला है।

रचना आमंत्रण

1. दिसंबर, 2021 माह में पड़ रहे पर्व, त्योहार, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय दिवस, महापुरुषों की जयंती, पुण्यतिथि एवं अन्य बाल सुलभ मौलिक व अपकाशित रचनाएँ (आलेख, कविताएँ, गीत, शिशु गीत, कहानियाँ, पहेलियाँ, लघुकथाएँ, नाटक, संस्मरण, प्रेरक प्रसंग, महापुरुषों की जीवनी व बाल साहित्य संबंधी रोचक जानकारियाँ) भेज सकते हैं।
   नोट : (बाल कविताएँ, बाल गीत या शिशु गीत कम से कम दो या तीन हों)
2. बाल पुस्तक की समीक्षा प्रकाशन के लिए पुस्तक की एक प्रति संपादक के पते पर भेजें।
3. आप अपनी रचना के साथ अपने, पास पड़ोस, स्कूल और परिचित बच्चों के द्वारा लिखी बाल कविता, बाल कहानियाँ व पेंटिंग्स आदि को भी भेजें। बच्चों को सृजन के लिए उत्साहित करें।
4. रचना भेजते समय रचना का शीर्षक, रचनाकार का नाम, पूर्ण पता, मोबाइल व व्हाट्सएप नंबर व रचनाकार/लेखक की फोटो स्पष्ट रूप से होनी चाहिए।
5. रचनाओं के प्रकाशन पर मानदेय की व्यवस्था नहीं है।
6. रचनाओं के प्रकाशित करने या न करने का अधिकार संपादकीय मंडल के पास सुरक्षित है।

रचना स्वीकार की अंतिम तिथि 05 दिसंबर, 2021

रचना निम्न पते पर भेजें-

editor.balkiran@gmail.com

ज्ञान का उजाला

लाल बहादुर श्रीवास्तव
मंदसौर (मध्य प्रदेश)

आज दिवाली का त्योहार था। सुबह से ही मुस्कान का मन नहीं लग रहा था। बार-बार आंखों में करूण दृश्य आंखों में घूम रहा था।

सुबह सुबह जब वो घर से स्कूल बस से निकलती रास्ते के जनता कालोनी की मेन रोड पर सुबह सुबह गरीबों परिवारों के झुण्ड के झुण्ड नज़र आ जाते। वहीं खाना बनाते वहीं सोते भी। न घर न रहने को छत। मुस्कान सोचती आखिर इनका कसूर क्या है?

जो इन्हें खुले आसमां में सोना पड़ता है। क्या इनका भगवान ही रखवाला है। ऐसे अनेक प्रश्न बालमन में आ रहे थे। आज दिवाली है ये कैसे मना पायेंगे?

अपनी बड़ी दीदी रुबी के पास सारे प्रश्न लेकर मुस्कान जब पहुंची। रूबी दीदी अपने आफिस के काम में व्यस्त थी।

दीदी! दीदी एक बात बताओं। मैं रोज स्कूल जाती हूं तब रास्ते के फुटपाथ पर कई गरीब परिवार खुले में रहते हैं वहीं सोते हैं ऐसा क्यों दीदी।

रूबी दीदी ने कहा-छोटी ये परिवार शुरू से ही मजदूरी कर रहे हैं इनके परिवार में कोई पढ़ा लिखा नहीं है इसी कारण से आज इनकी ये बुरी हालत बनी है।

दीदी तो क्या पढ़ लिख कर ये हमारी तरह अच्छा जीवन गुजार सकते हैं।

हां क्यों नहीं छोटी?

इनके बच्चे स्कूल क्यों नहीं जाते?

इसलिये नहीं जाते क्योंकि ये एक जगह कभी नहीं रहते। जहां काम मिलता है मजदूरी मिलती है वहीं चले जाते हैं।

अच्छा दीदी, इसीलिए ये स्कूल में पढ़ नही पाते हैं। दीदी मेरा मन करता है कि हम इनके पास जाकर इन्हें समझाएं कि एक जगह रहकर ही ये अपने बच्चों को पढ़ाये।

हां छोटी तुम्हारा सुझाव तो बहुत ही अच्छा है। ऐसा करते हैं हम पापा से चलकर पूछते हैं, पापा जरूर कोई न कोई रास्ता निकाल ही देंगे, वे सरकारी दफ्तर में अधिकारी जो है।

पापा के पास पहुंचते ही दोनों ने गरीब परिवारों के बच्चों की बात सुनाई।

पापा बोले-इनके बच्चे भी पढ़ लिख कर हमारी तरह जीवन यापन कर सकते है।

पापा-आप बताओ न हमें करना क्या होगा।

बेटा, ऐसा करो तुम स्कूल की प्राचार्य प्रियंका जी से मिल लो।

आज तो दिवाली की छुटटी है पापा।

तो क्या हुआ। उनसे फोन पर बात कर लो।

पापा ने रूबी को फोन नम्बर दे दिए।

कुछ समय बाद रुबी ने प्रियंका जी को फोन लगाकर गरीब लोगों के बच्चों की पढ़ाई लिखाई और रहने की व्यवस्था के बारे में जानकारी ली। प्रियका जी ने सारी बातें बताते हुए दिवाली के बाद ही इन गरीब परिवार के बच्चो को अपने सरकारी आवासीय होस्टल में पढ़ने हेतू रहने के लिए बुलाया।

रूबी ने कहा-छोटी हम उनके पढ़ाई लिखाई की सोच रहे हैं पहले हम उनसे मिलकर पूछे तो सही कि वे बच्चों को पढ़ाने के लिए सहमत भी है कि नही।

हां दीदी। चलो हम चलकर पूछते हैं।

अभी नहीं शाम को हम चलेंगे। अभी तो बाजार से दिवाली की मिठाईया पटाखे भी लाना है। बाजार से लौटने के बाद मम्मी के हाथ बनी मठरी गुजियां दोनों ने खाई।

फिर रूबी ने अपनी सायकिल निकाली, मुस्कान को बैठाई। और कुछ ही देर में सड़क के किनारे रहने वाले गरीब परिवारों के बीच पहुंच गई।

दोनों वहां रखी चारपाई पर मजे से बैठ गई।

गरीब परिवारों के लोगों और बच्चों ने घेर लिया था। मुस्कान बोली-हम यहां इसलिए आए हैं कि आप सभी लोगों का जीवन अंधकार से उजाले में बदल जाए।

गरीब परिवार के लोगों ने पूछा-हम कुछ नहीं समझे है क्या बात है।

रुबी बोली-दादा देखो आपके परिवार के लोग दिन भर मेहनत करते आ रहे हैं फिर भी आपके सर पर छत है न कोई घर। आप लोग इधर से उधर मजदूरी के लिए भटकते रहते हो। जिससे आपके बच्चे न स्कूल जा पाते हैं न पढ़ पाते हैं।

तो बेटी तुम ही बताओं न हम क्या करें जिससे हमारी ये गरीबी दूर हो जाये।

मुस्कान ने कहा-दादा आप कहीं भी जाकर मजदूरी करें पर बच्चों को सरकारी स्कूल में भर्ती करवा दें।

बेटी-हम तो बहुत गरीब है हमारे पास पढ़ाने लिखाने रहने के लिए पैसा भी नहीं है

मुश्किल से मेहनत मजदूरी करके पेट पाल

रहे हैं। हम तो पढ़ाने की दूर दूर तक सोच भी नहीं सकते।

दादा-आपको चिंता करने की जरुरत नही है सरकार ने गरीब बच्चों के लिए रहने के लिए छात्रवास बना रखे हैं वहां खाने पीने की पूरी व्यवस्था भी की है। स्कूल में फीस भी नहीं लगेगी। किताबें भी पढ़ने को मुफ्त में मिलेगी। बेटी ये कैसे होगा?

दादा हमने स्कूल की प्रिंसिपल प्रियंका जी से बात कर ली है। दिवाली के बाद आपके सभी बच्चों को छात्रावास में रहने का इंतजाम हो जायेगा साथ ही बच्चे स्कूल जाकर पढ़ लिख सकेंगे।

बेटी, ये तो बड़ी अच्छी बात है। हमारे बच्चे पढ़ लिख जायेंगे तो आने वाली पीढ़ियों को कभी भी हमारी तरह मजदूरी के लिए दर दर नहीं भटकना पड़ेगा। बेटा इस नेक काम के लिए हम तुम्हारे ऋणी रहेंगे।

नहीं दादा ये तो हमारा फर्ज था कि हम आपके सभी गरीब परिवार को समझाते हुए बच्चों को पढ़ने लिखने के लिए उत्साहित करें। जिससे आगे जाकर उनका भविष्य भी हमारे जैसा सुनहरा हो सके।

मुस्कान और रूबी दीदी ने अपने बैग में से मिठाई के डिब्बे और पटाखे निकालकर गरीब परिवारों में बांट दिए। बच्चों के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ गई।

घर आकर मम्मी पापा को इस बारे में बताया तो पापा बोले- मेरी दोनों बेटियों ने मेरा सर गर्व से ऊंचा कर दिया है। मेरा अभिमान है मेरी बेटियां। सही अर्थों में दीवाली पर ज्ञान का उजाला इन्होंने ही फैलाया है।

खुशियां लाई दिवाली

मीरा सिंह "मीरा"
बक्सर (बिहार)

घर घर खुशियां लाई दिवाली
झिलमिल करती आई दिवाली।
खिल खिलौने और पटाखें
तोहफें अनमोल लाई दिवाली।।

दूर हुआ जब का अंधियारा
रोशन हुआ है कोना-कोना।
दूधिया रोशनी से आज नहाई
सड़के गलियां है देखो ना।।
सबका मन हर्षायी दिवाली
घर घर खुशियां लाई दिवाली।

जगमग जगमग दीप जले हैं
मन को लगते कितने भले हैं।
हर तरफ बिखरी खुशहाली
चेहरे सबके खिले खिले हैं।
गली-गली आज धूम मची
बांटती फिरे मिठाई दिवाली।
घर घर खुशियां लाई दिवाली।

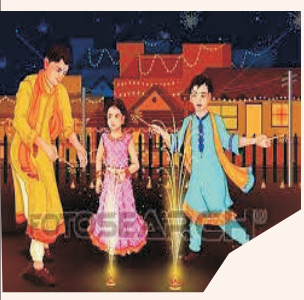

मिट्टी का एक नन्हा दिया
खम ठोक कर खड़ा हुआ।
अपने हौसले के दम पर
अंधियारे को परास्त किया।
हौसले से होती है जीत
पैगाम देने आई दिवाली।
घर घर खुशियां लाई दिवाली।

स्वामी पहुँचा दिल्ली

रोचिका अरूण शर्मा
चेन्नई (तमिलनाडु)

चेन्नई से बैठा उड़ान में, स्वामी पहुँचा दिल्ली।
दो घंटे में बदला मौसम, जैसे चालू बिल्ली।।

माह दिवाली होती बारिश, चेन्नई ताल भराये।
दिल्ली में सर्दी की ठिठुरन, स्वामी कंपकपाये।।

बर्फ जमे हाथों में झुन-झुन, गर्म रहूँ मैं कैसे।
मफलर-स्वेटर लिया मॉल से, खर्च हो गए पैसे।।

गर्म पराठों की खुशबू से, जीभ बहुत ललचाये।
देख पकौड़े गोभी वाले, मुंह में पानी आये।।

फुटपाथ पर लगी रेहड़ियाँ, छोले और भटूरे।
आलू-टिक्की, मक्का-रोटी, साग साथ में पूरे।।

नर्म धूप में सैर-सपाटा, चटपट चाट समोसा।
तरह-तरह के व्यंजन खाये, भूला इडली-डोसा।।

(स्वामी-दक्षिण भारत में नाम व उपनाम होता है।)

सुंदरवन में बाल दिवस

रेखा भारती मिश्रा
पटना (बिहार)

सुंदरवन के विद्यालय में
बाल दिवस की थी तैयारी
सूट-बूट में सभी सजे थे
मुखड़े पर मुस्कान थी प्यारी

मंच सजा था गुब्बारे से
लगा था लाउडस्पीकर भी
सभी जानवर आ पहुंचे थे
सजकर आए सब टीचर भी

मिस्टर हाथी थामे माइक
जब संबोधन आरंभ किए
नन्हे चीकू, लड्डू, बंदर
सब आये दीपक-थाल लिए

दीप जलाकर आयोजन का
सबने फिर शुभारंभ किया
कोयल गायी ईश वंदना
शावक ने मिलकर डांस किया

जंगल के पशुओं ने उस दिन
लुत्फ उठाया आयोजन का
चहक रहे थे सारे बच्चे
मान बढ़ा था सुंदरवन का

बाल दिवस

सुशीला शर्मा
जयपुर (राजस्थान)

चौदह नवंबर जन्म हुआ है
वो चाचा कहलाते हैं
बच्चे सब मिल इस शुभ दिन को
बाल दिवस मनाते हैं।

नेहरू चाचा की थी इच्छा
ज्ञान और विज्ञान बढ़े
बच्चे बनकर नौनिहाल
भारत माँ का उत्थान करें।

चाचा ने ये कहा था बच्चों
तुम गुलाब सम खिल जाना
अपनी सौंधी खुशबू से
इस देश की बगिया महकाना।

इस दिन होती हैं स्पर्धा
पुरस्कार वितरण होते
वीर-बहादुर बच्चों के यहाँ
नाम सभी उज्ज्वल होते।

भारत में हम इस शुभ दिन को
धूमधाम से मनाते हैं
मेले लगते जगह-जगह
चाचा के गीत सुनाते हैं।

आकर्षक खिलौने

टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)

अध्यापक ठाकुर जी कक्षा सातवीं में आए। बोले-"बच्चों ! कल से दशहरे की छुट्टी हो रही है पाँच दिनों के लिए; यानी शुक्रवार तक। बच्चे खुश हो गए। ठाकुर जी फिर बोले- "दशहरे की छुट्टी का आनंद लेने के साथ तुम सबको एक गृहकार्य भी करना है; और उसे कम्प्लीट करके जब स्कूल आओगे तब लाना है।

"क्या करना है सर जी गृहकार्य में; और जिसे स्कूल भी लायेंगे?" बच्चे एक स्वर में बोले।

"सबको खिलौना बनाकर लाना है; चाहे वह मिट्टी का हो, लकड़ी का हो या चाहे फूल, पत्ते, पत्थर का हो ; पर स्वयं का बनाया हुआ होना चाहिए। ध्यान रहे, सुंदर हो, मजबूत हो और आकर्षक भी हो। स्कूल आने के दिन उसे अनिवार्य रुप से लाना ही है।" ठाकुर जी ने कहा। बच्चों ने हाँ में सर हिलाया। फिर छुट्टी हो गयी।

दशहरे की छुट्टी खत्म हुई। बच्चे खुद के बनाये हुए खिलौने लेकर स्कूल आए। सबने बरामदे पर खिलौनों को रखा। अध्यापक ठाकुर जी ने सभी बच्चों से कहा कि तुम सब बारी-बारी अपने-अपने खिलौने के बारे में बताते जाओ।"

"सर जी ! यह एक कार है। इसके सभी कल-पुर्जे बहुत मँहगे हैं। इन सबको मैनें स्वयं खरीद कर बनाया है। बहुत खर्च करना पड़ा, तब यह इतना अच्छा बन पाया।" नीतीश ने सबसे पहले अपना

खिलौना दिखाया।

फिर राघव बोला-''यह एक डबलस्टोरी बिल्डिंग है सर जी। इसकी डेंटिंग-पेंटिंग मैनें खुद की है।" राघव की आवाज में बड़ा दम था।

महेंद्र की बारी आई। उसने भी अपने खिलौने का मुस्कुराते हुए परिचय दिया-''सर जी! देखिए न... मैं स्वयं हूँ। मैनें स्वयं को एक खिलौने का आकार दिया है। इसके लिए मैनें अपनी मम्मी से पैसा लिया है। मेहनत तो कम की है मैनें, पर पैसा बहुत लगाया है सर। क्यों, मैं अच्छा लग रहा हूँ न सर?"

''यह एक एंड्राइड मोबाइल फोन है सर जी। गीतिका सबको अपना खिलौना दिखाते हुए बोली-''लग रहा है ना सर बहुत बढ़िया ?"

इस तरह बच्चों ने अपने-अपने खिलौने का प्रदर्शन किया। अब सबकी नजर नीरज पर टिकी। वह चुपचाप से सकुचाया हुआ बैठा था। अपनी बारी आने पर भी वह खिलौना नहीं दिखा रहा था। कहने लगा-''मेरा खिलौना तो इन खिलौनों के सामने कुछ नहीं है सर जी, मैं क्या दिखाऊँ?"

''अरे नीरज, तुम जो भी बना कर लाए हो; दिखाओ।" अध्यापक नीरज की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले।

''सर जी मेरे मम्मी पापा तो चंद्रपुर कमाने खाने गए हैं। घर में मैं, दादी और मेरी छोटी बहन रहते हैं। हमारे घर पैसा नहीं है सर।" नीरज अपने खिलौने वाले थैले को पीछे छुपाने लगा।

''क्या है उसमें जी, हम लोग भी देखेंगे।" ठाकुर जी ने बड़े प्यार से नीरज के सर पर हाथ रखा।

''अंत में नीरज ने अपना खिलौना सबके सामने टेबल पर रख दिया। खिलौनों को देखकर अध्यापक ठाकुर जी गदगद हो गए। बच्चे भी बड़ी अचरज भरी नजरों से एक-दूसरे को देखते हुए नीरज के खिलौनों को निहार रहे थे-ढेर सारे मिट्टी के सुंदर छोटे-छोटे व विभिन्न आकृतियों के दीये थे। तभी अध्यापक ठाकुर जी मुस्कुराते हुए बोले-''वाह! बहुत सुंदर-सुंदर दीये बनाये हैं तुमने। यह सबसे बड़ा व सुंदर दीया किसलिए...नीरज?"

नीरज ने कहा-''सर जी ! इसे मैं दीपावली की रात को अपने स्कूल के मुख्य द्वार पर जलाऊँगा।

सभी बच्चों की नजर सिर्फ नीरज की दीये पर थी।

काबिलियत

विनय मोहन खारवन
जगाधरी (हरियाणा)

किसी जंगल में एक बहुत बड़ा तालाब था। तालाब के पास एक बागीचा था, जिसमे अनेक प्रकार के पेड़ पौधे लगे थे। दूर-दूर से लोग वहाँ आते और बागीचे की तारीफ करते।

गुलाब के पेड़ पर लगा पत्ता हर रोज लोगों को आते-जाते और फूलों की तारीफ करते देखता, उसे लगता कि हो सकता है एक दिन कोई उसकी भी तारीफ करे। पर जब काफी दिन बीत जाने के बाद भी किसी ने उसकी तारीफ नहीं की तो वो काफी हीन महसूस करने लगा। उसके अन्दर तरह-तरह के विचार आने लगे-''सभी लोग गुलाब और अन्य फूलों की तारीफ करते नहीं थकते पर मुझे कोई देखता तक नहीं, शायद मेरा जीवन किसी काम का नहीं... कहाँ ये खूबसूरत फूल और कहाँ मैं...'' और ऐसे विचार सोच कर वो पत्ता काफी उदास रहने लगा।

दिन यूँ ही बीत रहे थे कि एक दिन जंगल में बड़ी जोर-जोर से हवा चलने लगी और देखते-देखते उसने आंधी का रूप ले लिया. बागीचे के पेड़-पौधे तहस-नहस होने लगे, देखते-देखते सभी फूल ज़मीन पर गिर कर निढाल हो गए, पत्ता भी अपनी शाखा से अलग हो गया और उड़ते-उड़ते तालाब में जा गिरा।

पत्ते ने देखा कि उससे कुछ ही दूर पर कहीं से एक चींटी हवा के झोंको की वजह से तालाब में आ गिरी थी और अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रही थी।

चींटी प्रयास करते-करते काफी थक चुकी थी और उसे अपनी मृत्यु तय लग रही थी कि तभी पत्ते ने उसे आवाज़ दी, "घबराओ नहीं, आओ, मैं तुम्हारी मदद कर देता हूँ'', और ऐसा कहते हुए अपनी उपर बैठा लिया। आंधी रुकते-रुकते पत्ता तालाब के एक छोर पर पहुँच गया; चींटी किनारे पर पहुँच कर बहुत खुश हो गयी और बोली, ''आपने आज मेरी जान बचा कर बहुत बड़ा उपकार किया है, सचमुच आप महान हैं, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!"

यह सुनकर पत्ता भावुक हो गया और बोला, "धन्यवाद तो मुझे करना चाहिए, क्योंकि तुम्हारी वजह से आज पहली बार मेरा सामना मेरी काबिलियत से हुआ, जिससे मैं आज तक अनजान था। आज पहली बार मैंने अपने जीवन के मकसद और अपनी ताकत को पहचान पाया हूँ..''।

मित्रों, ईश्वर ने हम सभी को अनोखी शक्तियां दी हैं; कई बार हम खुद अपनी काबिलियत से अनजान होते हैं और समय आने पर हमें इसका पता चलता है, हमें इस बात को समझना चाहिए कि किसी एक काम में असफल होने का मतलब हमेशा के लिए अयोग्य होना नही है। खुद की काबिलियत को पहचान कर आप वह काम कर सकते हैं, जो आज तक किसी ने नही किया है!

बच्चों के मनोभावों के अनुरूप 'अमन का सपना' में तेरह कहानियाँ

मुकेश कुमार सिन्हा
सिन्हा शशि भवन
गया (बिहार)

कृति : अमन का सपना (बाल कहानी संग्रह)
कृतिकार : अशोक कुमार सिन्हा
प्रकाशक : ज्ञान गंगा क्रियेशन्स, पटना (बिहार)
प्रकाशन वर्ष : 2021, पृष्ठ : 48, मूल्य : 100/-
समीक्षक : मुकेश कुमार सिन्हा

पाँच कविता संग्रह, तीन यात्रा संस्मरण, दो उपन्यास, दो कहानी संग्रह सहित 28 पुस्तकों को रचने के बाद परिपक्व कलम मचल उठी बाल कहानियाँ रचने को। फिर, एक-एक कर तेरह कहानियाँ रच दी गयी। 'अमन का सपना' के रूप में कहानियों का यह गुलदस्ता बच्चों के हाथों में जाकर खिलखिलाने को आतुर है। बच्चों के लिए लिखना बेहद दुरुह है। बाल मनोविज्ञान की गहरी परख के अभाव में मुश्किल होता है बाल कहानियों को गढ़ना, किंतु वरिष्ठ साहित्यकार अशोक कुमार सिन्हा ने कोरोना काल में न केवल बच्चों की मनोदशा का अध्ययन किया, बल्कि सरल भाषा में बच्चों की नब्ज को पहचान कर कहानियाँ रचीं।

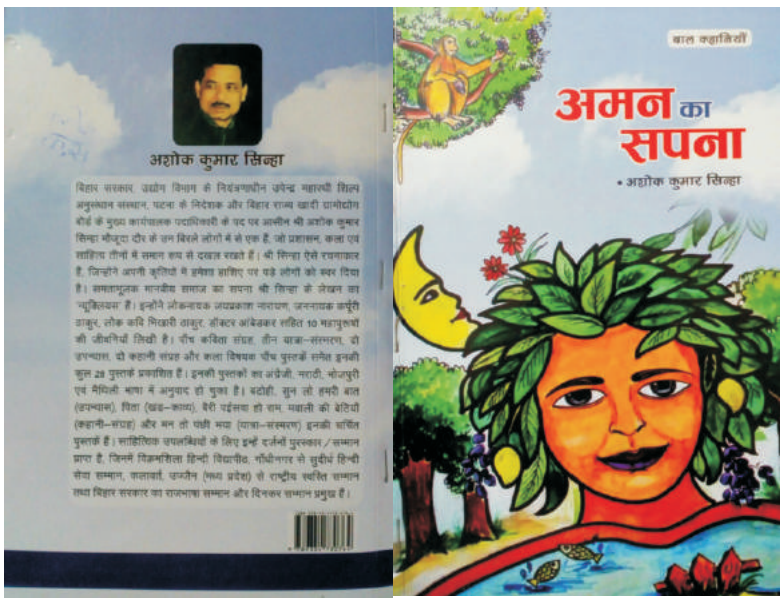

पहली बार वरिष्ठ साहित्यकार की कलम ने बच्चों के लिए लिखा। बकौल कहानीकार, प्रस्तुत संग्रह की कहानियों का उद्देश्य बाल-पाठकों का सिर्फ मनोरंजन ही नहीं, बल्कि उनमें मानव मूल्यों के विकास के साथ-साथ उन्हें जीवन की सच्चाइयों से अवगत कराना भी है।

'अमन का सपना' में जहाँ कहानीकार ने यह उम्मीद जगायी है कि हर बच्चों के दिन अमन जैसा फिरे, हर की किस्मत अमन जैसा हो जाये, वहीं यह सीख दी गयी है कि

जानवर भी प्यार के भूखे होते हैं, उन्हें सताना नहीं चाहिए। आदमी की तरह पशु-पंछियों को भी दर्द होता है, उसमें भी करुणा का भाव है। आखिर कुत्ता वफादार जानवर क्यों कहलाता है? गाय माता क्यों है? सोचिए, बगुला भगत में करुणा का भाव नहीं होता, तो सौम्या की जान बच पाती?

पढ़ाई बहुत जरूरी है। पढ़ाई से न केवल हम अक्षर पहचानते हैं, बल्कि कई जानकारियों को भी हासिल करते हैं। तुलसी गंवार और अनपढ़ थी, इसलिए सेठ उसे ठगता था, किंतु जब वह पढ़ गयी, तो सेठ को सबक सिखायी। इसलिए, पढ़ना-लिखना आवश्यक है। इससे हम अपने अधिकारों को जानते और समझते हैं। 'जंगल की तुलसी' कहानी पढ़ाई के महत्व को बताती है। हाँ, पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी जरूरी है। हम बच्चों को इंजीनियर-डॉक्टर बनाना चाहते हैं, लेकिन बच्चों की भावना को कहाँ समझ पाते हैं? बच्चों की रुचि को पहचान कर उसे सही राह दिखाने की जरूरत है। चमन को दिशा मिली, तो लेखन में उसकी सक्रियता बढ़ी। कहानीकार ने 'बादलों के देश में' में बच्चों को कहा-तुम भी लेखक बनो। चित्रकार बनो। खिलाड़ी बनो। विद्वान बनो। सीधे शब्दों में कहें तो 'चलन' को छोड़ने की नसीहत दी है। 'रोटीवाली माँ' बच्चों की प्रतिभा से वाकिफ हो गयी थी। माँ की बदौलत ही लखन प्रोफेसर बना, पवन चित्रकार तो अली गायक। माँ ने प्रतिभा को पहचान कर उसे ऊँचाई प्रदान की।

डरपोक आदमी कुछ कर सकता है क्या? वो तो हरपल भयाक्रांत रहेगा। जो बहादुर होता है, उसे दुनिया पूछती है। भुखली की बहादुरी को देखकर जमींदार का उसे गले लगाना लाजिमी था। फिर उसने गाँव की तस्वीर बदल दी। भुखली जैसी लड़की की जरूरत हर गाँव-शहर को है! राजा पीटर की निर्भीकता से गाँव लूटने से बचा। और-तो-और डाकू का हृदय परिवर्तन भी हुआ। इसलिए, बच्चों में निडरता जरूरी है। 'बहादुर लड़की' और 'पाठशाला' में बच्चों को संदेश है कि हम निडर रहकर संकट के बादल को छाँट सकते हैं। बुरी आदतों को छोड़कर सत्य और अहिंसा को अपनाने की सीख 'दोस्ती' में है।

दिव्यांगता अभिशाप नहीं है। दिव्यांगता के बाद भी पाँखी ने आत्मविश्वास को जिंदा रखा। फलतः मैट्रिक की परीक्षा में वह अव्वल रही। दिव्यांगता को लेकर मन में अफसोस का भाव किसी भी सूरत में पनपने नहीं देना चाहिए। यह अभिशाप नहीं है। बस हमें लक्ष्य को ध्यान में रखकर पाँव बढ़ाने चाहिए। स्टीफन हॉकिंग को उदाहरण

के तौर पर लिया जा सकता है। 'पुनर्जन्म' उन बच्चों को आशा की किरण जगाती है, जो दिव्यांगता को लेकर उदास रहते हैं।

'जल, जीवन और हरियाली' में चिंता है। मानव अतिवाद में फँसकर प्रकृति का दोहन कर रहा है। स्थिति यह है कि न जंगल का कोइ पता है और न ही नदी व तालाब का। सच ही कह रही थी मैना-'एक समय प्रत्येक गाँव में बाग-बगीचे, तालाब और पोखर हुआ करते थे। लेकिन वे दिन नहीं रहे अब। तालाबों को भरकर और पेड़-पौधों को काटकर वहाँ इमारतें खड़ी कर दी गई हैं।' केसर महतो ने भी ठीक कहा-'पेड़ प्रकृति का सबसे बड़ा उपहार है, जो मनुष्यता का प्रतीक है। पेड़ जिंदगी में उन्नति लाते हैं। प्रकृति में ऑक्सीजन पैदा करने की एकमात्र फैक्ट्री हैं वृक्ष। पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए। पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तो हम भी सुरक्षित रहेंगे।' इन कहानियों से बच्चे सीख सकेंगे कि नदी, पेड़ और तालाब कितना जरूरी है? निश्चित, जीवन के लिए प्रकृति का साथ बेहद जरूरी है।

भोग-विलासिता की वजह से हम अपनी जिंदगी तबाह कर रहे हैं। 'सुख की कमीज' में नसीहत है कि ज्यादा धन और ज्यादा आराम मनुष्य को सुख से जीने नहीं देता। हकीकत है कि बिना दुख सहे, सुख आता ही नहीं है। हमें सुख में इतराना नहीं चाहिए और दुख में घबराना नहीं चाहिए। वहीं हमें ईर्ष्या से भी बचना चाहिए, क्योंकि ईर्ष्या एवं डाह से आदमी स्वयं को मारता है। 'स्वर्ग' में कहानीकार की यह पंक्ति सीख देती है कि 'अगर गाँव से जलन और कुढ़न मिट जाए और लोग एक दूसरे से प्रेम करना सीख जाएं तो वह स्वर्ग बन सकता है।'

इन तेरह कहानियों के माध्यम से कहानीकार ने बच्चों को ईर्ष्या-द्वेष से बचने की नसीहत दी। मिल-जुलकर रहने एवं सदैव सत्य-अहिंसा का पालन करने को कहा। सीख दी कि पर्यावरण की रक्षा जरूरी है, दिव्यांगता कोई अभिशाप नहीं है कि हम थककर या हारकर बैठ जायें। निडरता और निर्भीकता से हम प्रतिकूल स्थितियों को भी अनुकूल बना सकते हैं। हर कहानी संदेश छोड़ती है।

कहानी की भाषा सरल और सहज है, जो पाठकों के लिए बोझिल नहीं है। बच्चों को रौशन ध्रुव द्वारा तैयार चित्रांकन से कहानियों को समझने में सहूलियत होगी। कथा भूमि प्रदान करने वाले 'अगस्त्य' को समर्पित इस कहानी संग्रह में बच्चों के मनोभाव को समझते हुए कहानियाँ रची गयीं हैं। कहानीकार का यह प्रयास अनूठा है!

अनुभव राज
मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार)

मेरा परिवार

दादा दादी मम्मी पापा
यह मेरा परिवार है
भईया दीदी, चाची चाचा
सबसे मिलता प्यार है

छुट्टी में नाना नानी के
घर मैं जब भी जाता हूँ
मामा मामी के संग मेला
घूम कर मैं आता हूँ

मौसा मौसी जब भी मुझसे
मिलने घर पर आते हैं
तरह तरह के खेल खिलौने
पुस्तक सुंदर लाते हैं

बुआ फूफा गाड़ी से
दिल्ली की सैर कराते हैं
हम बच्चे भी साथ में उनके
हँसते और इठलाते हैं

मेला

मेले में हम जब भी जाते
चाट पकौड़ी आइसक्रीम खाते

कहीं गोलगप्पों का है रेला
कहीं है जादूगर अलबेला
कहीं लगा है जूस का ठेला
कहीं किताबों का है मेला

कहल खिलौने, कपड़े वाला
बाँसुरी कहीं बजाने वाला
कहीं गुब्बारे, झूले वाला
कहीं निशाने मारने वाला

कहीं नाच कठपुतली का तो
कहीं लोकगीत बजता है
कहीं टेंट सर्कस का है और
कुआं मौत का दिखता है

कहीं पॉपकॉर्न भुट्टा सिंकता
कहीं अचार और पापड़ बिकता
कहीं दुकानें चूड़ी वाली
कहीं सजावट दीपों वाली

मेले में हम धूम मचाते
खुश होकर घर वापस आते

चाँद मोहम्मद घोसी
नन्हा बाजार,
मेड़ता सिटी-341510
(राजस्थान)

बाल सृजन

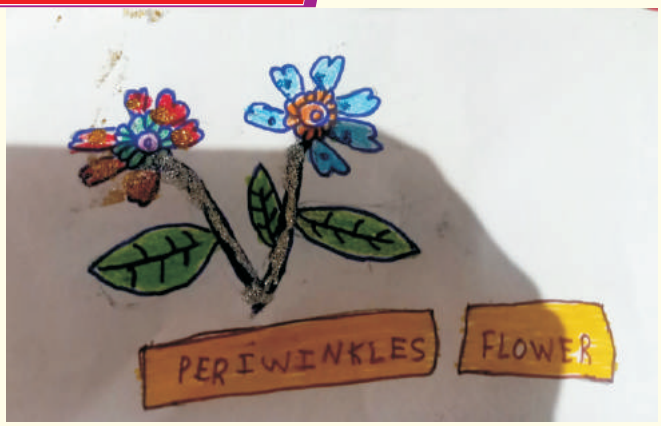

गार्गी माहेश्वरी
कक्षा-3

हिमानी जोशी
कक्षा-9
रा.इ.का. बाजपुर
ऊ.सिं.नगर (उत्तराखण्ड)

दिव्याश्री सतेन्द्र शर्मा
कक्षा-6, मुंबई

बाल किरण
एक उम्मीद...
'बाल किरण' मासिक पत्रिका का नवंबर, 2021 अंक
प्रकाशित होने पर नव किरण प्रकाशन व पत्रिका
परिवार की तरफ से आप सभी को दीपावली व बाल
दिवस की हार्दिक बधाई व असीम शुभकामनाएँ !
नव किरण प्रकाशन समूह द्वारा प्रकाशित
सितंबर, 2021
बाल किरण
एक उम्मीद...
बाल मासिक पत्रिका
संपादक
लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
नवंबर, 2021
बाल किरण
एक उम्मीद...
बाल मासिक पत्रिका
बाल दिवस
संपादक
लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
नव किरण प्रकाशन
बस्ती, उत्तर प्रदेश द्वारा हाल ही में प्रकाशित पुस्तकें
मोबाइल : +91 7355309428 E-mail : laldevendra706@gmail.com
कम दाम
सही काम
एक नाम
नव किरण प्रकाशन बस्ती
उच्च क्वालिटी की पुस्तकों के प्रकाशन का एकमात्र स्थान
पुस्तक पर आई. एस. बी. एन.
गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं
कम समय में प्रकाशन व सुपुर्दगी
पुस्तकें अमेज़न व फ्लिपकार्ट में भी उपलब्ध
सम्पर्क करें :
लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
संपादक / प्रकाशक
मोबाइल : +91 7355309428, 9919507870
E-mail : laldevendra706@gmail.com
कार्यालय: बैरिहवा, (सिमरन पैराडाइज होटल के पीछे) बस्ती (उ. प्र.)
नव किरण प्रकाशन
बस्ती (उत्तर प्रदेश) की प्रस्तुति
देश विदेश में सम्मानित हो चुके दतिया [मध्य प्रदेश] के
प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. अरविन्द श्रीवास्तव जी का हास्य-व्यंग्य संग्रह
हर माल बिकाऊ है
जल्द प्रकाशित हो रहा है !
उच्च क्वालिटी के पुस्तकों के प्रकाशन का एक मात्र स्थान
सम्पर्क करें :
लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
संपादक/प्रकाशक
नव किरण प्रकाशन समूह
मोबाइल - +91 7355309428 ईमेल - laldevendra706@gmail.com
नव किरण प्रकाशन
बस्ती (उत्तर प्रदेश) की प्रस्तुति
अंग्रेजी के प्रवक्ता व विद्वान साहित्यकार छत्तीसगढ़
निवासी टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला" जी की अनुपम काव्य कृति
जल्द प्रकाशित हो रहा है !
उच्च क्वालिटी के पुस्तकों के प्रकाशन का एक मात्र स्थान
सम्पर्क करें :
लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
संपादक/प्रकाशक
नव किरण प्रकाशन समूह
मोबाइल - +91 7355309428 ईमेल - laldevendra706@gmail.com